



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 40 अंक-47

कल्पादि सम्वत् 1972949116

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 01 मार्च से 07 मार्च 2017 तक

फाल्गुन शुक्ल तृतीया से फाल्गुन शुक्ल दशमी सम्वत् 2073 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

वोट के
चक्कर....

पृष्ठ- 3

जमीन और
फसल...

पृष्ठ- 4

स्वास्तिक
शुभत्व...

पृष्ठ- 5

वन्दे मातरम्
एण्ड..

पृष्ठ- 8

देश के
पीएम या...

पृष्ठ- 12

- शाब्दिक लीपापोती से बिगड़ रहे हालात
- पश्चिम बंगाल से 'पश्चिम' शब्द हटाने का प्रस्तावित निर्णय हास्यास्पद!
- कुरान और हदीस ही सबसे बड़ा संविधान कैसे?
- भगवान शिव : सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की साक्षात् त्रिवेणी

चीन की मीडिया ने भारत को दी चेतावनी भारत को डरने की जरूरत नहीं—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

चीन के आधिकारिक मीडिया ने ताइवान कार्ड खेलने को लेकर भारत को आगाह करते हुए कहा कि इस संवेदनशील मुद्दे पर बीजिंग को चुनौती देने का नयी दिल्ली को खामियाजा भुगतना पड़ेगा। ताइवान के महिला सांसदों के प्रतिनिधिमंडल के भारत दौरे के बाद मीडिया ने नयी दिल्ली को आगाह किया है। सरकारी समाचार पत्र ग्लोबल टाइम्स में नयी दिल्ली को ताइवान कार्ड खेलने का खामियाजा भुगतना पड़ेगा शीर्षक से प्रकाशित एक आलेख में कहा है— ताइवान के मुद्दे पर चीन को चुनौती देकर भारत आग के साथ खेल रहा है। अखबार में प्रकाशित आलेख में कहा गया **शेष पृष्ठ 11 पर**



अंतरिक्ष में भारत की सबसे बड़ी कामयाबी, रचा इतिहास इसरो के वैज्ञानिक प्रशंसा के पात्र—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अंतरिक्ष में भारत ने बुधवार को एक बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो के प्रक्षेपण यान पीएसएलवी ने श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केन्द्र से एक एकल मिशन में रिकॉर्ड 908 उपग्रहों का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। यहां से करीब 925 किलोमीटर दूर श्रीहरिकोटा से एक ही प्रक्षेपास्त्र के जरिये रिकॉर्ड 908 उपग्रहों का प्रक्षेपण



सफलतापूर्वक किया गया। जानकारी के अनुसार इन 908 उपग्रहों में भारत के तीन और विदेशों के 909 सैटेलाइट शामिल हैं। भारत ने एक राकेट से 908 उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजकर इस तरह का इतिहास रचने वाला पहला देश बन गया है। प्रक्षेपण के कुछ देर बाद पीएसएलवी-सी३७ ने भारत के काटरेसेट-२ श्रृंखला के पृथ्वी पर्यवेक्षण उपग्रह और दो अन्य उपग्रहों तथा 903 नैनो उपग्रहों को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सफल अभियान को लेकर इसरो को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि पूरे देश के लिए यह गौरव का क्षण है। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के प्रमुख एसएस किरण कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 908 उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण पर इसरो दल को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने एक ही राकेट के जरिए 908 उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के लिए वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि इस अहम उपलब्धि ने भारत को गौरवांविता किया है। इसरो के अनुसार पीएसएलवी-सी३७-काटरेसेट २ श्रृंखला के सैटेलाइट मिशन के प्रक्षेपण के लिए उलटी गिनती बुधवार सुबह ५.२८ बजे शुरू हुई। मिशन रेडीनेस रिव्यू कमेटी एंड लांच ऑथोराइजेशन बोर्ड ने प्रक्षेपण की मंजूरी दी थी। अंतरिक्ष एजेंसी का विश्वस्त ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान पीएसएलवी-सी ३७, अपने ३६वें मिशन पर अंतरराष्ट्रीय उपभोक्ताओं से जुड़े रिकॉर्ड 908 उपग्रहों को प्रक्षेपित किया। प्रक्षेपण के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि इतनी बड़ी संख्या में राकेट से उपग्रहों का प्रक्षेपण किया गया। रूसी अंतरिक्ष एजेंसी की ओर से **शेष पृष्ठ 11 पर**

सनातन धर्म एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण तथ्य

‘स्वस्तिक’ एक प्रतीक या चिन्ह है, जो सदा मांगलिक माना जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है—‘जो स्वस्तित्व अथवा क्षेम का कथन करता है।’ सनातन धर्म इसे भगवान श्रीगणेश (विघ्नहर्ता, मंगलदाता) का लिप्यात्मक स्वरूप तथा विष्णु और सूर्य का प्रतीक मानता है। ‘स्वस्तिक’ विश्व-चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। यह बतलाता है कि ब्रह्म शाश्वत केन्द्र बिन्दु है, जो अचल और अपरिवर्तनीय है। सारा ब्रह्माण्ड इसी केन्द्र-बिन्दु के चारों ओर घूम रहा है। जनसाधारण में युगों से यह विश्वास बना हुआ है कि ‘स्वस्तिक’ चिन्ह से दुष्ट आत्माओं और प्रकृति के प्रकोप से रक्षा होती है। कमल अथवा पद्म पुराण में हिरण्यमय पद्म (सुनहरे कमल) से संसार की उत्पत्ति का वृत्तान्त मिलता है। कमल जल में रहता है और कीचड़ से उगकर एक सुन्दर पुष्प का रूप धारण करता है। जल और कीचड़, दोनों के स्पर्श से दूर रहकर, वह मनुष्य को सर्वदा निर्लिप्त रहने की प्रेरणा देता है। सनातन धर्म में कमल को अत्यन्त पवित्र और महत्वपूर्ण स्थान मिला। भगवान विष्णु का एक नाम पद्मनाभ भी है—अर्थात् जिसकी नाभि में कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई है, इसलिये उन्हें ‘पद्म योनि’ अथवा ‘कमलयोनि’ भी कहते हैं। कमल अपनी पवित्रता और विशेष गुणों के कारण ही देवी-देवताओं के आसन के रूप में चित्रित किया जाता है। हिन्दू धर्म में ‘श्री’ शब्द का प्रयोग बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण है। ‘श्रीयुक्त’ का अर्थ है लक्ष्मीवान, सौन्दर्यपूर्ण, तेजयुक्त एवं आदरणीय। ‘श्री’ दुर्लभ विभूतियों से संपन्न होने का भी प्रतीक है। इस शब्द से तीन पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम की भी अभिव्यक्ति होती है। सिद्धिदायी चक्रों में ‘श्रीचक्र’ का महत्वपूर्ण स्थान है। ‘श्री’ धन-धान्य की देवी लक्ष्मी और विद्या-दान की देवी सरस्वती का भी पर्याय है, अतः इससे धन और ज्ञान, दोनों की सम्पन्नता प्रकट होती है। मानव जीवन में सौभाग्य और समृद्धि ‘श्री’ की उपस्थिति है। हिन्दू धर्म ने श्रेष्ठ तत्त्वों के साथ ‘श्री’ जोड़कर, उनकी गरिमा को उद्भासित करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम प्रदान किया है।

स्वस्तिक कमल श्री

गीता संदेश

- आत्मा अमर है। मन की दुर्बलता को त्यागो।
- कर्म करो फल की इच्छा मत करो।
- लाभ हानि, शुभ-अशुभ में सम पुरुष स्थिर बुद्धि है।
- यज्ञ रहित पुरुष पाप भोगता है।
- जब-जब धर्म की हानि होती है तथा अधर्म बढ़ता है, तब-तब प्रभु अवतार लेते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं।
- निष्काम कर्म योगी ही सन्यासी है।
- ईश्वर भक्त कभी नष्ट नहीं होता।
- जो सदा ईश्वर को याद करता है वह ईश्वर को प्राप्त होता है।
- सब शक्तियों का अन्तिम स्रोत..... ईश्वर ही है।
- ईश्वर के लिए कर्म करने से तथा सब से प्रेम भावना रखने से ईश्वर की प्राप्ति होती है।
- समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर के विराट स्वरूप में समाये हुए हैं।
- जो ईश्वर का ध्यान लगाता है उसे ईश्वर भवसागर से पार लगा देते हैं।
- जो अपनी निन्दा स्तुति में सम है वह ईश्वर को प्रिय है।
- ईश्वर के लिए सभी प्राणी समान हैं वह सब का निस्वार्थ प्रेमी है।
- जैसे वायु गंध को अपने साथ ले जाती है वैसे आत्मा कर्मों को साथ ले जाती है।
- काम, क्रोध और आशयें मनुष्य को बाँधती हैं और परमात्मा से दूर ले जाती हैं, अतः इन्हें त्यागना चाहिए।
- अश्रद्धापूर्वक किया गया दान-तप यज्ञ न इस लोक में न परलोक में फलीभूत होता है।
- पूर्ण रूप से ईश्वर की शरण में आने वाला मनुष्य पाप मुक्त हो जाता है।
- जो गीता पढ़ता है और पढ़ाता है वह प्रभु को सर्वप्रिय है।
- ईश्वर सब के हृदय में स्थित हुआ सब को अपनी माया से भ्रमा रहा है।
- जहाँ भगवान श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाँधीव धनुषधारी अर्जुन हैं वहीं विजय, विभूति और अचल नीति है। ऐसा ईश्वर का कथना है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आसान काम भी चुनौती के रूप में नजर आयेंगे। मानसिक दक्षता बढ़ाने में प्रयासरत रहेंगे। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा लिहाजा लोग आपकी बात को मानेंगे। जिम्मेदारी निभाने में कोई नयी रणनीति सफलता दिला सकती है। किसी विषय में आप मतिभ्रम का शिकार हो सकते हैं।

वृष : इस सप्ताह परिवार में विरोधाभास की स्थिति रहेगी जिसके कारण मृगतृष्णा आप पर पूरी तरह हावी रहेगी। उच्च अधिकारियों से किसी बात पर मनमुटाव हो सकता है। आपके कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी इसलिए नये पैतरे खेलने पड़ सकते हैं।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में त्वरित निर्णय लेने पड़ सकते हैं। कुछ लोगों के साथ अपमान जनक स्थिति आ सकती है। हताशा और निराशा आपके जीवन में घर न करने पायें। मजबूरन रुढ़िवादी तरीके अपनाने पड़ सकते हैं।

कर्क : इस सप्ताह आप-अपनी बात रखने में सफल होंगे जिससे मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी। सहयोगी विद्रोह करने में सफल होंगे ऐसी स्थिति में आप हिम्मत से काम लें। अतिरिक्त जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार रहिए।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों के मन में निराशा हावी होगी जिससे गलत निर्णय लेने की आशंका है। आश्चर्यजनक तथ्य सामने आ सकते हैं। किसी प्रिय से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। छात्रों को प्रतियोगी परिक्षाओं में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।

कन्या : इस सप्ताह आप आश्चर्यजनक घटनाओं को लेकर चिन्तित रहेंगे। दूर-दराज के लोगों से मेल-मिलाप होगा। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। सरकारी कर्मचारियों को रुके हुये धन की प्राप्ति हो सकती है।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों को सन्तान के प्रति प्रतीकात्मक त्याग करना पड़ सकता है। हर कार्य का अपना नियत समय होता है, इसलिए परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

वृश्चिक : यह सप्ताह आपके लिए परिवर्तन एवं लाभकारी प्रतीत होगा। सम्बन्धों के माध्यम से कोई रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। जिस राह पर आप चल रहें हैं, वह कांटो भरी है।

धनु : इस सप्ताह भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। अपनी क्षमतायें बढ़ायें। योजनाओं का फल आपके अनुरूप नहीं मिलने से मन चिन्तित रहेगा। लोग आप पर निर्भर रहेंगे किन्तु आप उनकी मदद न करकर उन्हें प्रेरणा देने का काम करें। किसी भी कार्य में अन्तिम समय में अपने विचार न बदलें।

मकर : विरोधियों के तमाम प्रपंचों के बावजूद भी अन्त में आपकी ही विजय होगी। आपके रुखे स्वभाव के कारण अपने ही लोग हानि पहुँचा सकते हैं। आर्थिक मामलों में सामान्य स्थिति बनी रहेगी। व्यवसायी वर्ग अनिर्णय की स्थिति में रह सकता है। छात्रों के लिए समय उत्तम रहेगा।

कुम्भ : परिवार की ओर से मिल रहे सहयोग में विराम लग सकता है जिससे हकीकत का सामना होगा। कठिन परिस्थितियाँ सामने आ सकती हैं। पथ प्रदर्शक दूरी बना सकते हैं। योजनायें लम्बित हो सकती हैं। न्यायिक निर्णय आपके विपरीत आ सकते हैं।

मीन : कुछ लोगों को इस सप्ताह परिवार की तरफ से कोई शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। भाइयों का सुख व सहयोग प्राप्त होगा। अपनी वाणीपर नियन्त्रण रखें। आप अपने किसी नजदीकी सहयोगी के द्वारा परेशानी में पड़ सकते हैं।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

नन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते॥

यान्ति देवव्रा देवान्पितृन्त्यान्ति पितृवताः॥

भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपो माम्॥

देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझ को ही प्राप्त होते हैं। इसीलिये मेरे भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता॥२५॥

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति॥

तदहं भक्त्युपहृतमश्रामि प्रयतात्मनः॥

जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्धिबुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र-पुष्पादि मैं सगुण रूप से प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता हूँ॥२६॥

यत्करोषि यदश्रासि यज्जुहोषि ददासि यत्॥

यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर॥२७॥

शुभाशुभफलैरेवं मोक्षयसे कर्मबन्धनैः॥

सन्नयासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि॥

इस प्रकार, जिसमें समस्त कर्म मुझ भगवान् के अर्पण होते हैं—ऐसे संन्यासयोग से युक्त चित्तवाला तू शुभाशुभ फलरूप कर्मबन्धन से मुक्त हो जायेगा और उनसे मुक्त होकर मुझको ही प्राप्त होगा॥२८॥

अध्यक्षीय

वोट के चक्कर में हम को ही भूले



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के नेताओं से नयी शिकायत यह है कि अब वे उनकी शैली में भाषण देने लगे हैं। जिस तरह से रैलियों के दौरान जनता से सवाल-जवाब करते हैं, वैसे ही अब उनके विरोधी नेता भी करने लगे हैं। अभी तक भाषण शैली के कापीराइट के बारे में तो नहीं सुना है, मोदीराज में मुमकिन है यह भी देखने मिले। वैसे मोदीजी की वाकपटुता, बोलने की शैली, बीच-बीच में विरोधियों की नकल उतारना, कभी चुटकियां लेना, कभी भावुक हो जाना, तो कभी सीना ठोककर कहना, यह सब श्रोताओं को प्रभावित तो करता ही है। नरेन्द्र मोदी के भाषणों की एक खास बात यह है कि वे मौके और स्थान के मुताबिक स्वयं को बखूबी ढाल लेते हैं। जैसे बच्चों से संवाद किया तो अपने बचपन के किस्से सुनाए, योग दिवस हुआ तो कुशल योगी बन गए, गरीबों के बीच अपनी गरीबी को याद किया और अवसर के अनुकूल होने पर ढोल भी बजा दिया। वे स्थानीय मुद्दों और वहां के महापुरुषों को भी मौके से याद कर लेते हैं। बनारस में मां गंगा ने बुलाया है, वाला उनका नाटकीय संवाद लंबे वक्त तक मीडिया की मेहरबानी से गुंजायमान रहा। जब वे उत्तराखंड चुनाव में भाजपा के प्रचार के लिए हरिद्वार पहुंचे तो यहां की जनता को भी यही उम्मीद थी कि को मोदीजी यहां नमन करेंगे। चुनावी भाषण में भूल गए। उन्होंने देवभूमि के रूप में हुए कहा कि जब

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अपनी मां गंगा भी याद करेंगे, लेकिन वे अपने मां गंगा को हरिद्वार को संबोधित करते इस देवभूमि का नाम लिया जाता तो कश्मीर से कन्याकुमारी तक कोई भी हिंदुस्तानी ऐसा नहीं होगा, जिसे हरिद्वार के जिक्र पर गंगा, मठ, मंदिर, बफीली चोटियां, ऋषिमुनियों, साधु-संतों के मठ-मंदिरों की याद न आती हो। गंगा के इस संक्षिप्त उल्लेख के बाद प्रधानमंत्री के भाषण में कहीं गंगा का जिक्र नहीं हुआ। उसमें हो रहे अवैध खनन, उसमें मिलते गंदे, दूषित जल पर तकलीफ का वर्णन नहीं हुआ। अलबत्ता उन्होंने यहां के पानी की विशेषता का जिक्र करते हुए कहा कि उत्तराखंड का पानी, यहां की बिजली हिंदुस्तान की प्यास भी मिटा सकती है, हिंदुस्तान का अंधेरा भी मिटा सकती है। रविवार को श्रीनगर में भी उन्होंने कहा कि यहां का पानी भी पानीदार है। यहां के पानी में भी दम है। लेकिन जीवनदायिनी गंगा की बदहाली पर भाषण में जरा भी जिक्र न होने से यहां की जनता को काफी निराशा हुई है। मोदीजी ने सैनिकों की बात की, बेरोजगारी दूर करने का वादा किया, किसानों की स्थिति सुधारने का दावा किया, लेकिन एनडीए सरकार के ड्रीम प्रोजेक्ट नमामि गंगे के बारे में कुछ नहीं कहा। दरअसल प्रधानमंत्री के पास इस बारे में कहने के लिए सकारात्मक कुछ भी नहीं है। विगत ढाई वर्षों में गंगा सफाई का शोर तो खूब हुआ है, लेकिन हालात बिल्कुल नहीं बदले हैं। जानकारों का मानना है कि २०१४ से अब तक गंगा की एक बूंद तक साफ नहीं हो पाई है। इससे साफ है कि यह महत्वाकांक्षी परियोजना २०१८ तक किसी भी सूरत में पूरी नहीं होने वाली। केंद्र सरकार के सात बड़े मंत्रालय भले इससे जुड़े हों, लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात वाला ही आया है। गंगा दिन ब दिन मैली होती जा रही है। उसमें आज भी गंदे नालों, सहायक नदियों से प्रदूषणयुक्त कचरा, औद्योगिक इकाइयों द्वारा विषैला गंदा पानी और रसायनयुक्त प्रदूषित अवशेष गिर रहा है। दावों के विपरीत, रोजाना १२ हजार ५१ मिलियन लीटर सीवेज बिना शोधन के गंगा में जा रहा है। गंगा में ऑक्सीजन की मात्रा कम होने की यह अहम वजह है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भी मानता है कि हरिद्वार में गंगा में ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है। ऋषिकेश तक गंगा का पानी नहाने लायक जरूर है, लेकिन हरिद्वार के बाद यदि कोई इसे पी ले, तो उल्टी-दस्त के साथ जानलेवा बीमारियों की गिरफ्त में आने का खतरा है। गंगा की यह दुर्दशा कमोबेश हर जगह है। उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार कहीं भी गंगा का जल आचमन लायक भी नहीं है, ऐसा विशेषज्ञों का कहना है। नमामि गंगे मिशन के लिए २० हजार करोड़ आवंटित हैं। पर गंगा की दशा देखते हुए यह राशि भी पानी में डूबी हुई लगती है। उत्तराखंड की वर्तमान स्थिति पर प्रधानमंत्री ने कांग्रेस की हरीश रावत सरकार को खूब घेरा है। चुनाव की अब यही परंपरा हो गई है। लेकिन मोदीजी महज भाजपा के नेता नहीं, देश के प्रधानमंत्री भी हैं। क्या उत्तरप्रदेश और उत्तराखंड में गंगा उनके लिए कोई मुद्दा नहीं है, या वह केवल लोकसभा में वाराणसी सीट तक ही सिमट कर रह गया है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

शाब्दिक लीपापोती से बिगड़ रहे हालात



कश्मीर में एक बार फिर अशांति की चिंगारी सुलगने लगी है। बीते रविवार कुलगाम में आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच इस साल का सबसे भीषण एनकाउंटर हुआ जिसमें चार आतंकी मारे गए, लेकिन दो जवान शहीद भी हुए। इनके साथ आतंकियों से कथित तौर पर हमदर्दी रखने वाले एक आम नागरिक की मौत भी हुई। बाद में पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प में एक और शख्स की मौत हो गई। कुल आठ जानें चली गई और पीछे छोड़ गई वही सुलगता सवाल कि आखिर जम्मू-कश्मीर में हालात सुधर क्यों नहीं रहे हैं। रविवार की यह मुठभेड़ उसी इलाके में हुई है, जहां पिछले साल हिज्बुल के पोस्टर बॉय बुरहान वानी को सुरक्षाबलों ने मार गिराया था। बुरहान के बाद शुरू हुआ हिंसा का दौर कई महीने चला था। जिसमें ६० से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग घायल हुए थे, जिनमें बहुत से सैनिक भी थे। अलगाववादी और कट्टरपंथी ताकतों को बुरहान की मौत के बाद अपनी सियासत गरमाने का लग गया था, जबकि सरकार गेंद को एक में डालने में लगी रही। में अशांति और माहौल बनता है, राज्य ताकती है और केंद्र

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

एक और मौका हाथ केंद्र और राज्य पाले से दूसरे पाले जब भी इस राज्य अस्थिरता का सरकार केंद्र का मुंह पाकिस्तान को

दो-चार खरी-खोटी सुनाकर अपनी जिम्मेदारी निभा लेता है। कुलगाम मुठभेड़ पर भी राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह ने दिल्ली की एक प्रेसवार्ता में कहा कि भारत की जमीन पर आतंकवाद पाकिस्तान प्रायोजित है। उन्होंने कोई नयी बात नहीं बताई। सब जानते हैं कि सीमापार से आतंकवादी घुसपैठ करते हैं और यहां हिंसा का खेल खेलते हैं। लेकिन आतंकवादियों को स्थानीय लोगों से सहयोग मिलने की जो बात सामने आ रही है, उस बारे में सरकार क्या सोचती है और इसे रोकने के लिए क्या कदम उठाती है, यह जानना जरूरी है। आतंकवाद का सफाया केवल बंदूक से नहीं हो सकता, लेकिन सरकार हर मौके पर सिपाहियों की बहादुरी के लिए अपनी पीठ थपथपा कर यह साबित करना चाहती है कि वह आतंकवाद से कितनी सख्ती से निपट रही है। जबकि हकीकत कुछ और ही नजर आ रही है। बेशक सुरक्षाबलों के कारण ही देश काफी हद तक सुरक्षित है। हमारे सैनिक जान हथेली पर रखकर देश की रक्षा कर रहे हैं। कुलगाम में चार आतंकियों को १० घंटे की भीषण मुठभेड़ में मार गिराना, सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों की सतर्कता के कारण ही संभव हुआ। इस मुठभेड़ से पहले सुरक्षाबलों को खुफिया एजेंसियों से पुख्ता जानकारी मिली थी कि एक घर में आतंकी छिपे हुए हैं। सुरक्षाकर्मियों ने उस घर को घेर लिया, जिसमें आतंकी छिपे हुए थे। अंदर से आतंकियों ने गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। इसके बाद दोनों तरफ से जमकर गोलीबारी हुई। जिसमें चार आतंकी मारे गए, जबकि तीन फरार हो गए हैं। बताया जा रहा है कि जिस घर में आतंकी छिपे थे, उसके मालिक के बेटे की गोली लगने से मौत हो गई। आरोप है कि जब मुठभेड़ चल रही थी तो उसने सैनिकों के ऊपर पत्थर फेंके। इस मुठभेड़ के बाद इलाके में हिंसक विरोध-प्रदर्शन शुरू हो गए। प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए सेना को गोलीबारी करनी पड़ी। इसमें १८ लोग घायल हो गए, जबकि एक शख्स की मौत हो गई। मुठभेड़ के बाद की यह अशांति सरकार की नीतिगत खामी ही मानी जाएगी कि वह अपनी जनता का भरोसा खो रही है। सुरक्षा बलों का कहना है कि हाल के महीनों में आतंकियों से हमदर्दी रखने वाले लोगों की तादाद में इजाफा हुआ है। ये लोग अक्सर आतंकियों के खिलाफ सुरक्षाबलों की कार्रवाई में बाधा पहुंचाते नजर आ रहे हैं। जाहिर है आतंकवाद से निपटने में तब तक कामयाबी नहीं मिलेगी, जब तक स्थानीय लोगों का विश्वास न जीता जाए। लेकिन फिलहाल केंद्र और राज्य सरकार दोनों ही इसमें असफल दिख रहे हैं। वे केवल शाब्दिक लीपापोती में लगे हैं, और जम्मू-कश्मीर के हालात बिगड़ते जा रहे हैं। चुनावी रैलियों में सैनिकों की दिलेरी और कुबानी का जिक्र सरकार अवश्य करे, लेकिन उन मुश्किल हालात का समाधान भी निकाले, जिनके कारण सैनिकों को शहादत देनी पड़ती है। घाटी के लोगों, खासकर युवाओं को आतंकवादी बहलाने में क्यों कामयाब हो रहे हैं, इसकी जड़ें पहचानना जरूरी है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, व्यवसाय इन सबमें सरकार लोगों की मदद करे तो वे भी खुशी-खुशी सरकार की मदद करेंगे।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

हरी खाद का उपयोग भूमि तथा पौधों दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी और उर्वरकों के मद में पैसा बचाकर खेती को लाभकारी बनाने का सबसे सस्ता, सुलभ एवं सरल तरीका है। पौधों के हरे भाग को खेत में मिलाना और जीवांश की आपूर्ति करना तथा प्राकृतिक खाद तैयार करना इसकी परिभाषा हो सकती है। उल्लेखनीय है कि भूमि की उर्वराशक्ति विविध प्रकार के जीवाणुओं की क्रियाशीलता पर निर्भर रहती है और हरी खाद का उपयोग इसकी सशक्त विधि हो सकती है।

वास्तव में मिट्टी एक जीवित तंत्र है क्योंकि उसमें हजारों लाखों जीवाणु पनपते रहते हैं। इन जीवाणु के लिए कार्बनिक पदार्थ अच्छा भोजन है। जब भी मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की कमी होगी इन जीवाणुओं के जीवन के एक क्रियाशीलता पर विपरीत असर पड़ेगा। एक अनुसंधान के परिणाम से बात सामने आई है कि एक हैक्टेयर हरी खाद के उपयोग से

भूमि में लगभग ८० किलो नत्रजन, १८ किलो स्फुर तथा ७० किलो पोटेश भूमि में एकत्र हो जाता है जिसकी कीमत यदि रसायनिक उर्वरकों के उपयोग से लगाई जाये तो आज की स्थिति में २००० से कम नहीं होगी।

हरी खाद के रूप में उपयोग के लिए ऐसी फसलों का उपयोग किया जाना चाहिए जो शीघ्रता से उग कर बढ़ें भी और अधिक से अधिक पत्ते/शाखाएँ उपलब्ध करा सकें। तना भी नरम रहे और विघटन जल्दी हो जाये। इसके लिए सनई सबसे अच्छी मानी गई है। ढेंचा, मूंग, उड़द, ग्वार, लोबिया जैसी फसलों का उपयोग भी हरी खाद के रूप में सफलता से किया जा सकता है। ढेंचा की किस्म 'सिसबेनिया रोस्ट्रेटा' के परिणाम हरी खाद के रूप में अधिक अच्छे पाये गये हैं। इसके तनों पर ग्रंथियाँ होती हैं तथा तना मुलायम होता है जिसका विघटन जल्दी हो जाता है। हरी खाद की अनेक फसलों को खेतों की मेढों पर भी लगाकर साल में तीन बार उसकी

जमीन और फसल दोनों के लिए लाभकारी हरी खाद

कटाई करके पर्याप्त मात्रा में हरा पदार्थ मिट्टी को उपलब्ध कराके उसकी दशा में परिवर्तन किया जा सकता है।

अनुसंधानों के परिणाम बताते हैं कि बंजर से बंजर भूमि का भी उद्धार हरी खाद के सतत उपयोग से किया जाकर उसे खेती के लायक बनाया जा सकता है। हरी खाद का उपयोग खरीफ, रबी दोनों फसलों के लिए किया जा सकता है। खरीफ फसलों के लिए हरी खाद की फसल की बुआई पानी के साधनों पर निर्भर रहती है। उसके अनुसार अप्रैल, मई माह में हरी खाद की फसल लगाई जा सकती है तथा एक माह बाद उसको भूमि में मिलाकर फसलों के लिए जैविक खाद को उपलब्ध कराया जा सकता है,



साथ में रसायनिक उर्वरकों के उपयोग में कटौती करके पैसा बचाया जा सकता है। ध्यान रहे खेती को लाभकारी बनाने की प्रथम सीढ़ी है उसकी लागत को कम किया जा सके। इससे शुरुआत ही अच्छी बचत से हो जाती है तो खेती में हानि का सवाल ही नहीं उठता। सनई या ढेंचा की फसल को केला तथा कपास की बीच की दो कतारों के बीच भी लगाकर उसे एक माह में मोड़ा जाकर अच्छी जीवांश बढ़ाने वाली खाद फसल को उपलब्ध करके उत्पादन तो बढ़ाया जा सकता है साथ ही खेत की भूमि की दशा तथा दिशा

दोनों में परिवर्तन लाया जा सकता है। हरी खाद की उपयोगिता बढ़ाने के लिए २५० किलो रॉक पास्फेट/हेक्टेयर तथा ५ किलो पीएसबी कल्चर/प्रति हे. की दर से डालने से उसका विघटन तथा भूमि में स्थगित स्फुर की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। वर्तमान में दो फसली/तीन फसली फसल चक्र के चलते भूमि में पोषक तत्वों का क्षरण तेजी से हो रहा है जिसको संतुलित करने के लिए हरी खाद का उपयोग एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है।

साभार राष्ट्रदेव

बड़े काम की चीज है : जामुन

नि.जी. डेस्क

फलों की विविधता की दृष्टि से दुनिया में भारत का कोई मुकाबला नहीं। यहाँ हर मौसम में कुछ खास फल हैं। हर फल की अपनी कुछ खास विशेषता है। बारिश की फुहार पड़ते ही बाजार में जामुन की रौनक बढ़ जाती है। डॉक्टरों की राय में डायबिटीज को नियंत्रित रखने में यह काफी कारगर है। सीधे शब्दों में कहें तो डायबिटीज के लिए जामुन रामबाण दवा है। जर्मन शोधकर्ताओं के मुताबिक, जामुन की पत्तियों प्रोजेस्ट्रा में वृद्धि कर उसे संतुलित रखती हैं। चरक संहिता में वर्णित पुष्पानुग चूर्ण में भी जामुन की गुठली मिलाए जाने का विधान बताया गया है। जामुन की गुठली में 'जंबोलिन' नामक ग्लूकोसाइट पाया जाता है। यह स्टार्च को शर्करा में परिवर्तित होने से रोकता है जो डायबिटीज के नियंत्रण में सहायक है।

रोगों में भी फायदेमंद है जामुन : एक जामुन में केवल ३-४ कैलोरी ऊर्जा, प्रोटीन, वसा, कैल्शियम, विटामिन बी, सी, मैग्नीशियम,

पोटेशियम, आयरन आदि होते हैं। जामुन का सिरका बनाकर पीने से भूख खुलकर लगती है व कब्ज दूर होती है। गंले के रोगों में जामुन की छाल को पीसकर उसका सत्व बना लें। इस सत्व



को पानी में घोलकर गरारा करने से गला साफ होगा, आपकी आवाज अच्छी बनी रहेगी और साँस की दुर्गन्ध की समस्या से निजात मिलेगी।

जामुन लीवर को शक्ति प्रदान करने के साथ मूत्राशय की असामान्यता को दूर करने में भी सहायक है। जामुन का रस शहद, आँवले या गुलाब के रस के साथ मिलाकर पीने से रक्त की कमी व शारीरिक दुर्बलता दूर होती है।

जामुन का शर्बत बनाकर रख लें। उल्टी-दस्त या हैजा होने पर यह शर्बत पीने पर तुरंत राहत मिलती है। गठिया के इलाज में जामुन बहुत उपयोगी है। इसकी छाल को पीसकर बनाए गए घोल का लेप घुटनों पर लगाने से गठिया के दर्द से निजात मिलती है। विषैले जंतुओं के काटने पर जामुन की पत्तियों का रस काफी कारगर साबित होता है। जामुन की पत्तियों में नमी सोखने की अद्भुत क्षमता होती है। काटे गए स्थान पर जामुन की पत्तियों को बाँधने से घाव जल्दी ठीक होता है।

पथरी के मरीजों के लिए जामुन की गुठली का चूर्ण दही के साथ खाना काफी फायदेमंद है। जामुन की गुठली का चूर्ण आधा-आधा चम्मच दो बार पानी के साथ लगातार कुछ दिनों तक पीने से बच्चों की बिस्तर में पेशाब करने की आदत छूट जाती है।

भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त

भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने का शंखनाद कर दिया।

भारत को उन्नति को शिखर पर पहुँचाना है ठान लिया।। समय-समय पर भारत आजाद, राजगुरु व सवाकर जैसे पैदा हुआ करते है।

जो प्राणों को राष्ट्र के लिए समर्पित किया करते है।

भारत को.....

सौभाग्य है यह हमारा निर्भीक प्रधानमंत्री है, हमारा।

सम्पूर्ण विश्व है कहता मोदी जैसा नेता हो हमारा।।

शत्रु की धरा पर तिरंगा फहरवा दे जो।

ऐसा कूटनीतिज्ञ प्रधानमंत्री है, हमारा।।

भारत को.....

दुःभाग्य उस राष्ट्र का जो शोभा सिंह जैसो को उत्पन्न करते है।

जो निज स्वीर्थ की सोच रख राष्ट्र भक्त के विपक्ष में खड़े हुआ करते है।।

सच्चे राष्ट्र चिन्तक मोदी जैसे हुआ करते है जो राष्ट्र के लिए घर को भी त्याग करते है।।

पीयूष अरोड़ा, चान्दपुर

प्रतीक चिन्हों का अपना विशिष्ट महत्व होता है। विश्व की लगभग सभी संस्कृतियों और धर्मों में अपनी कल्पना, आस्था आदि की साकार अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन काल से ही प्रतीक चिन्हों का सहारा लिया जाता है। इन प्रतीक चिन्हों को शुभ, कल्याणकारी और मांगलिक माना जाता है। मान्यता है कि ये प्रतीक चिन्ह शुभ फलदायी होते हैं। उल्लेखनीय है कि ये प्रतीक चिन्ह अनायास या बेवजह ही अस्तित्व में नहीं आये, बल्कि इनके होने के पीछे ठोस कारण या मान्यताएँ ही रही हैं। स्वास्तिक एक ऐसा ही पवित्र और मांगलिक चिन्ह है, जिसे विश्व के लगभग सभी धर्मों में विशेषतः हिन्दू धर्म में अति उच्च स्थान हासिल है। वेद, पुराणों से लेकर विभिन्न धर्मशास्त्रों में स्वास्तिक की विशिष्टता पर प्रकाश डाला गया है।

स्वास्तिक की उत्पत्ति सु उपसर्ग और अस् धातु के संयोग से हुई है। सु का अर्थ शुभ, कल्याणकारी, मंगलकारी और श्रेष्ठ होता है जो अस् धातु से जुड़कर कल्याणकारी अथवा मंगलकारी सत्ता के अर्थ का बोध हो जाता है। अर्थात् स्वास्तिक का अभिप्राय कल्याणकारी सत्ता से है। इसीलिए स्वास्तिक को शुभ, कल्याणकारी, मंगलदायक और सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। अमर कोश में कहा गया है—'स्वास्तिक सर्वतो ऋद्ध' अर्थात् सभी दिशाओं की ओर से स्वास्तिक के द्वारा कल्याण हो। उल्लेखनीय है कि स्वास्तिक की मुख्य चार भुजाएँ हैं, जो चारों दिशाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। चारों दिशाओं के अलावा स्वास्तिक की चारों भुजाओं को चारों युग, चारों वर्ण, पुरुषार्थ चतुष्टय, चारों नक्षत्र, जीवनकाल के चारों आश्रम, चतुर्मुखी ब्रह्मा और चारों वेदों का भी प्रतीक माना गया है। यही नहीं स्वास्तिक को मुख्य चारों भुजाओं से जुड़ी अन्य चारों भुजाओं को मिलाकर आठ भुजाओं वाला भी माना गया है और इन आठों भुजाओं को पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आदि आठ तत्त्वों का प्रतीक माना गया है। हिंदू धर्म के आदि ग्रंथ ऋग्वेद में स्वास्तिक को सूर्य का प्रतीक बताया गया है। इस मान्यता के अनुसार इस समस्त सृष्टि में सूर्य ही एकमात्र सर्वशक्तिमान साक्षात् देव हैं। वे सभी शक्तियों के केन्द्र, सबसे प्रभावशाली और

सर्वशक्तिमान हैं। सूर्य की इस सर्वशक्तिमता का अभिनंदन करने के लिए उनके प्रतीक स्वरूप स्वास्तिक की पूजा की जाती है। इस प्रतीक स्वरूप में स्वास्तिक की चारों भुजाएँ सूर्य

है कि स्वास्तिक की विधिपूर्वक पूजा से लक्ष्मी प्रसन्न होती है तथा सुख, समृद्धि और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

ज्योतिष, वास्तुशास्त्र आदि अध्यात्म के अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भी

है। स्वास्तिक की चारों भुजाएँ भी इसी तरह आपस में बंटी हैं। भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार गृह में उचित स्थान पर विधिपूर्वक यथास्थान स्वास्तिक चिन्ह अंकित करने से ऋणात्मक ऊर्जा नष्ट

जैन, बौद्ध, सिख आदि अन्य धर्मों में भी हासिल है। भारत के बाहर के धर्मों एवं संस्कृतियों में भी स्वास्तिक का अपना विशिष्ट महत्व रहा है। प्राचीन मिश्र एवं यूनान की खुदाइयों में भी ऐसे चिन्ह मिले हैं जो स्वास्तिक के समरूप हैं और यह स्थापित करते हैं कि पाश्चात्य देशों में भी स्वास्तिक को प्राचीनकाल से ही सम्मान दिया जाता रहा है। यूरोप की एक आदिवासी प्रजाति मावारी में भी इसे शुभ प्रतीक चिन्ह के रूप में पूजा जाता है। चीन में भी इसे धर्म प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। वहाँ इसे कुआद-शी-तियेन् कहते हैं, जबकि जापानी में इसे कांगिएन और कंबोडिया में प्राहकेनीज कहते हैं। कई धर्म-संप्रदायों में इसे मन के प्रतीक रूप में भी ग्रहण किया गया है।

स्वास्तिक चिन्ह कल्याण का प्रतीक है। शुभत्व का प्रतीक है। सृजन और प्रेम का प्रतीक है। इसीलिए विश्व के लगभग सभी धर्मों, संप्रदायों एवं संस्कृतियों में इसे विशिष्ट महत्व के साथ स्वीकार किया गया है। हिंदू धर्म में इसका अति उच्च स्थान अमिट है। देखने में छोटा-सा लगने वाला शुभत्व का यह प्रतीक चिन्ह निःसंदेह अपने आप में अद्भुत कल्याणकारी शक्ति और पवित्रता को समेटे हुए है।

स्वास्तिक : शुभत्व और कल्याण का प्रतीक चिन्ह

महामण्डलेश्वर १०८ श्री स्वामी मार्तण्डपुरी जी महाराज

की चारों दिशाओं यानि पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण का प्रतिनिधित्व करती हैं।

स्वास्तिक को सगुण-साकार ईश्वर के एक रूप भगवान विष्णु का भी प्रतीक माना गया है। विष्णु को इस समस्त सृष्टि का पालनकर्ता कहा जाता है और स्वास्तिक से भी मंगलकारी कर्ता का ही अर्थ ध्वनित होता है। एक मान्यता के अनुसार स्वास्तिक की चारों भुजाएँ विष्णु की चारों भुजाओं की प्रतीक है और स्वास्तिक के बीच का बिंदू विष्णु के नाभिकमल-ब्रह्म स्थान का प्रतीक है। पुराणों में स्वास्तिक को विष्णु के सुदर्शन चक्र का भी साक्षात् स्वरूप माना गया है।

एक मान्यता के अनुसार स्वास्तिक को भगवान गणेश का भी साक्षात् रूप माना गया है। हिंदू धर्म में किसी भी शुभ कार्य, पूजा आदि में सर्वप्रथम विघ्नहर्ता गणेश की पूजा करने का विधान है। मान्यता है कि गणेश की प्रथम पूजा से कार्य में बाधा नहीं आती और कार्य निर्विघ्न संपन्न होता है। मांगलिक कार्यों में स्वास्तिक चिन्ह को अंकित कर सर्वप्रथम उसकी पूजा भी इसी उद्देश्य से की जाती है। स्वास्तिक के प्रथम पूजन के संबंध में मान्यता है कि इसके दर्शन, पूजन, स्पर्श से कार्य में सफलता मिलती है। भारत ही नहीं नेपाल के हिंदू धर्मावलंबियों के बीच भी स्वास्तिक को गणपति का रूप माना गया है और वहाँ इसे हेरम्ब कहते हैं।

इसके अलावा भी हिंदू धर्मशास्त्रों में स्वास्तिक को विभिन्न देवी-देवताओं का प्रतीक माना गया है। शुभ सौभाग्यदायक और मंगलकारी होने के कारण 'श्री' यानी लक्ष्मी को इस चिन्ह की अधिष्ठात्री देवी के रूप में स्वीकार किया गया है। लक्ष्मी सुख, समृद्धि और धन की दात्री देवी है। मान्यता



होती है और सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है। वास्तुशास्त्र एवं खगोलविज्ञान के अलावा भारतीय दर्शन के अनुसार स्वास्तिक सृष्टि की सृजनात्मकता का प्रतीक है। यह ब्रह्म

स्वास्तिक का विशिष्ट महत्व है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र अथवा खगोल विज्ञान में स्वास्तिक को चारों कोण, चारों दिशाओं और चारों नक्षत्रों का प्रतीक माना गया है। उल्लेखनीय है खगोल विज्ञान में संपूर्ण खगोल को चार नक्षत्रों पुष्य, चित्रा, श्रवण एवं रेवती के समानान्तर विभागों में विभक्त किया गया है, जो आपस में ६०-६० अंश की बराबर दूरी पर

रूप है। स्वास्तिक की खड़ी रेखा स्वयंभू ज्योतिर्लिंग तथा आड़ी रेखा सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है, जो शिव-शक्ति के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति का बोध कराता है। इसके अलावा अक्षर ब्रह्म यानी ईश्वर के प्रतीक अक्षर 'ॐ' के प्रतीक चिन्ह के रूप में भी स्वास्तिक की मान्यता है। स्वास्तिक को यह विशिष्टता केवल हिंदू धर्म ही नहीं बल्कि

दिल्ली में सौर ऊर्जा से ६६ लाख रु. की बचत

इन्द्रप्रस्थ बिजली संयंत्र की खाली जमीन पर पिछले साल लगाए थे सौर ऊर्जा संयंत्र दिल्ली विद्युत नियामक आयोग (डीईआरसी) का नया आपूर्ति कोड नियमन मई तक प्रभाव में आने की संभावना है, जिसके तहत बिजली वितरण कंपनियों को अधोषित बिजली कटौती के लिए उपभोक्ताओं को मुआवजा देना पड़ सकता है। नियमन का मसौदा अभी तैयार किया जा रहा है। आयोग ने इससे पूर्व नियमन का मसौदा जारी किया था और लोगों से इस पर सुझाव के लिए समय सीमा बढ़ाकर २१ मार्च कर दी है। पूर्व की अधिसूचना के मुताबिक, यह २० फरवरी को खत्म होने वाली थी। बिजली नियामक ने कहा कि अंतिम तिथि बढ़ाने का निर्णय लोगों से अनुरोध मिलने के बाद किया गया। माना जाता है कि इन प्रस्तावों का विश्लेषण करने के बाद आवश्यक बदलाव किए जाएंगे जिसमें करीब एक से डेढ़ महीना लगेगा।

देशी पैनल से हो रहा बिजली उत्पादन

सोलरइनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा लगाए गए इस संयंत्र में सभी उपकरण स्वदेशी हैं। इस संयंत्र पर दिल्ली सरकार को पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ा। ऊर्जा विभाग का कहना है कि आने वाले समय में संयंत्र की क्षमता एक मेगावाट से बढ़ाकर ३ मेगावाट कर दी जाएगी। ऊर्जा मंत्री सत्येंद्र जैन ने भी सौर ऊर्जा के जरिए सचिवालय में बिजली आपूर्ति होने की प्रशंसा की है। दिल्ली सचिवालय सौर ऊर्जा से जगमग हो रहा है। वहीं इससे हो रही बिजली आपूर्ति की वजह से पिछले सालभर में सरकार को ६६ लाख रुपए की बिजली बचत हुई है। पिछले साल दिल्ली सचिवालय में सौर ऊर्जा संयंत्र से बिजली की आपूर्ति शुरू की गई। बंद हो चुके इन्द्रप्रस्थ बिजली संयंत्र की खाली पड़ी जमीन पर पिछले साल एक मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र लगाए गए। संयंत्र से बिजली का उत्पादन शुरू हो गया और सालभर में ६६ लाख रुपए बिजली की बचत हुई। इस प्रयास से सरकार की धनराशि में बचत तो हुई ही, साथ ही प्रदूषण में भी गिरावट आई। फिलहाल दिल्ली सचिवालय में बिजली की अधिकतम मांग २.५ मेगावाट है। जानकारी के अनुसार नवंबर २०१५ में दिल्ली सचिवालय के बिजली बिल में ४६८५४० यूनिट बिजली की खपत दिखाई गई, जबकि फरवरी २०१७ में यह घटकर २३४६०० यूनिट हो गया है। **ललित मैनी**

पश्चिम बंगाल राज्य का नाम बदले जाने पर ममता बनर्जी सरकार ने फैसला ले लिया है और राज्य की कैबिनेट ने जैसे ही सहमति जताई अब यह अंग्रेजी में सिर्फ 'बंगाल' या बांग्ला भाषा में 'बांगो' या 'बांग्ला' कहा जाएगा। अभी तक इसे पश्चिमी बंगाल कहा जाता है। अधिकतर लोगों के अनुसार बंगाल के पहले 'पश्चिम' लगाना आवश्यक है क्योंकि इससे आनलाइन एप्लीकेशन में आसानी होती है। राज्य सरकार के अनुसार नाम बदलने के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा विधानसभा के 26 अगस्त से प्रारंभ होने वाले विशेष सत्र में हो सकती है। राज्य के संसदीय कार्य

नहीं लगता है कि इन्तजार करने की अपनी असुविधा के कारण वे इतना महत्वपूर्ण निर्णय राज्य का नामकरण बदलकर करें। कुछ लोग तो यह भी महसूस कर रहे हैं कि

गिरफ्तारी के बावजूद पश्चिमी बंगाल के मार्क्सवादी कैडरों व तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेताओं में एक अव्यक्त सांठगांठ है। सारे उत्तर-पूर्व को स्वयं अमेरिकी व

पार के शहरों में 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' व इंग्लैंड के संसदीय प्रतिनिधि मंडल ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट में हिन्दुओं के नरसंहार व मंदिरों के विध्वंस के बाद गत तीन वर्षों में नंगा नाम किया है पर ममता बनर्जी ने ऐसी सभी सूचनाओं को अनदेखा किया। चाहे खालिदा जिया हो या शेख हसीना और भारत में बुद्धदेव भट्टाचार्य अथवा ममता बनर्जी हों उनके दिखावटी चेहरों के पीछे हिन्दू विद्वेष सारे पूर्वी भारत को शरीयत की कार्यशाला बना चुका है। जनसांख्यिक परिवर्तन व चेतावनियों के लिए भौगोलिक रणनीति के अनेक अंतर्राष्ट्रीय

हटाने का निर्णय अधिक तर्कपूर्ण लगता यदि वह औपनिवेशिक नामकरण की मनोवृत्ति के विरुद्ध होता जो ब्रिटिशों द्वारा 1909 में बंगाल के विभाजन के बाद किया गया था। पर ममता बनर्जी का निर्णय आक्रोश में नरेन्द्र मोदी से प्रतिशोध लेने के लिए किया गया है जो सतहा व हास्यास्पद है। पहले सिंगूर और नन्दीग्राम व लालगढ़ की माओवादी व नक्सलवादी हिंसा को शह देकर ममता बनर्जी ने उनकी समानान्तर सरकार को शह व प्रशासन दशकों से दुष्प्रक्रिया चलाया था। हथियारों से लैस सी.पी.एम. कैडर से लड़ने के लिए उन्होंने राष्ट्रद्रोहियों के

Cabinet clears name change of West Bengal to either Bangla or Bongo

पश्चिम बंगाल से 'पश्चिम' शब्द हटाने का प्रस्तावित निर्णय हास्यास्पद!

क्या राज्य का पुनः नामकरण कर पश्चिम शब्द हटाना तर्कसम्मत परिवर्तन अथवा ममता बनर्जी के अहंकार की अभिव्यक्ति

हरिकृष्ण निगम

मंत्री पार्थ चटर्जी ने यह भी कहा कि आम जनता राज्य की सांस्कृतिक विरासत को रेखांकित करने के लिए यह निर्णय पसंद करेगी। राज्य की राष्ट्रीय स्तर पर 'हितों के संरक्षण' में इस निर्णय से मदद मिलेगी। इससे पहले सन 2011 में बुद्धदेव भट्टाचार्य की अगुवाई वाली वामपंथी सरकार ने राज्य का नाम बदलकर 'पश्चिम बंग' करने का फैसला स्वीकृत किया था पर उसे कार्यान्वित नहीं कर सके थे। नाम बदलने पर केन्द्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल के भाजपा सांसद बाबुल सुप्रियो ने कहा था—“यह कमाल का आइडिया है। हमारे पास रायल बंगाल टाइगर है ही!” शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी यह दावा करते हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर इस नए नाम की आवश्यकता के बारे में ममता बनर्जी ने मई 2011 में सत्ता में आने के बाद इस परिवर्तन की प्रक्रिया के लिए कदम लेने शुरू कर दिए थे। वह यूपीए-2 का समय था जब इसमें कोई रुचि नहीं दिखाई गई थी। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी इस विषय में जब वे दिल्ली में मिलना चाहती थीं तब वे उस मुलाकात के लिए पाँच घंटे तक इंतजार कर चुकी थीं। क्योंकि अंग्रेजी वर्णमाला में 'वेस्ट' के 'डब्ल्यू' क्रम में आने के लिए उन्हें इतनी देर लगी थी। क्या यह हास्यास्पद

यदि 'बंग' शब्द को बंगाल में जैसा वे 'बंगो' कहकर उच्चारण करते हैं तब वह अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों को 'बोंगो' बन जाएगा जो संगीत का उपकरण होता है। दूसरी ओर 'बांग्ला' एक ऐसा शब्द है जो एक देशी शराब का भी नाम है।

ममता बनर्जी की राजनीतिक यात्रा देश के लिए ही नहीं बल्कि समस्त भारत के पूर्वी राज्यों के लिए असमंजस व अप्रत्याशित विवादों के कारण दुविधा भरी रही है। आज जब मंदर टेरेसा को पोप फ्रान्सिस ने स्वयं वेटिकन में संतत्व प्रदान करने का निर्णय सितम्बर 2016 में एक समारोह में लेने का निर्णय लिया है ममता बनर्जी कहती हैं कि उस 'केनोराइजेशन' या भावी 'बीटिफिकेशन' के अवसर पर वे वहाँ जाएँगी। ममता बनर्जी को बंगाल, असम, बिहार व उड़ीसा में मुस्लिमों के बढ़ते जनसांख्यिक दबावों व परिवर्तनों पर कोई चिंता कभी नहीं रही। वे भली-भाँति जानती हैं कि सन 1947 में बांग्लादेश में हिन्दू 98 प्रतिशत से अधिक थे अब मात्र 1 प्रतिशत रह गए हैं। असम-सिलीगुड़ी गलियारे से लगे गाँव व क्षेत्र पूरी तरह मुस्लिम बहुल हो चुके हैं और वहाँ पर अलकायदा, सिमी और आई.एस.आई.एस. का वर्चस्व है। हिन्दू विद्वेषी कुछ ही दिनों में 99000 इस्लामी धर्मान्धों की

यूरोपीय खुफिया एजेंसी एक टिक-टिक करने वाला 'टाइमबम' कह चुकी है जो कभी भी फटकर सारे हिन्दुस्तान को खतरे में डाल सकता है। पश्चिमी बंगाल के हावड़ा, 28 परगना, झाड़ग्राम, नन्दीग्राम, वरीसाल, चटगाँव, काकज बाजार, मैमनसिंह और दूसरे सीमा

ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञों ने ग्रंथ लिखे हैं पर लगता है हमारे देश के श्रव्य-दृश्य व मुद्रित अंग्रेजी मीडिया में उनको उद्धृत करने का भी साहस तिरोहित हो चुका है। यह स्पष्ट है कि पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का अपने राज्य के नाम से पश्चिम शब्द

अवसरवाद को खुलकर समर्थन दिया। उनका गरीबों व आदिवासियों के लिए रक्तपात का सुझाया मार्ग तात्कालिक इलाज बन गया और इसका नक्सलियों व माओवादियों के तरीकों का अंग्रेजी मीडिया ने भी आश्चर्यजनक रूप से समर्थन किया था।

पाकिस्तान में सक्रिय साम्प्रदायिक संगठनों की सूची

1. दावत-उल्-इरशाद (प्रवचन और मार्गदर्शन का केन्द्र)
2. हरकत-उल्-अन्सार (सहायकों का आन्दोलन)
3. हरकत-उल्-जिहाद अल्-इस्लामी (इस्लामी जिहाद के लिए आन्दोलन)
4. हरकत-उल्-मुजाहिदीन (मुजाहिदीन का आन्दोलन)
5. इस्लामी जमीयत-ए-तुल्बा (इस्लामी क्षेत्र-आन्दोलन)
6. जैश-ए-मुहम्मद (मुहम्मद की सेना)
7. जमात-ए-इस्लामी (इस्लामी समाज)
8. जमात-उद्-दावा (प्रवचन हेतु संगठन)
9. जमीयत-उल्-उल्मा-ए-इस्लाम (इस्लाम के उल्माओं का संघ)
10. जमीयत-उल्-उल्मा-ए-पाकिस्तान (पाकिस्तान के उल्माओं का संघ)
11. लश्कर-ए-इंगवी (इंगवी सेना)
12. लश्कर-ए-तैयबा (निष्पाप लोगों की सेना)
13. मुत्तहिदा मजलिस-ए-अमल (क्रियाशील संयुक्त परिषद)
14. मुत्तहिदा कौमी महाज (संयुक्त राष्ट्रीय आन्दोलन)
15. निजाम-ए-मुस्तफा (पैगम्बरी शासन व्यवस्था)
16. सिपाह-ए-मुहम्मद पाकिस्तान (मुहम्मद के सिपाही)
17. सिपाह-ए-सहाबा पाकिस्तान (पाकिस्तान में पैगम्बर के साथियों की सेना)
18. तब्लीगी जमात (धर्म-प्रचार संस्था)
19. तहरीक खात्म-ए-नबावत (पैगम्बर की एकच्छत्रता के लिए निर्णयात्मक आन्दोलन)
20. तहरीक-ए-निफाज-ए-फिकह जफारिया (शिया-विधि को लागू करने के उद्देश्य हेतु आन्दोलन)
21. तहरीक-ए-निफाज-ए-शरियत-ए-मुहम्मदी (इस्लामी कानून को बलपूर्वक लागू करने के लिए आन्दोलन)
22. तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (पाकिस्तान का तालिबानी आन्दोलन)

(लगभग ये सभी भारत में भी क्रियाशील हैं।)

डॉ० सर्वेशचन्द्र शर्मा

वर्ष २००८ में पेरिस में शरीयत के कानूनों को क्रियान्वित करने के जो अलग-अलग ढंग और रूप हैं, उन पर इस्लामी विद्वानों में खुलकर बहस हुई थी। इस बात पर भी चर्चा हुई कि अनेक ऐसे कानून हैं जिन्हें इस्लाम मान्यता देता है लेकिन आधुनिक दुनिया नहीं, जैसे गुलामी इस्लामी कानून में वैध है। लेकिन बाहरी दुनिया और कानून इसे अवैध मानते हैं। वाशिंगटन के जार्ज टाउन विश्वविद्यालय में इस्लामी इतिहास

निकाह, तलाक, विरासत और बच्चों की देखभाल जैसे निजी मामलों तक ही मर्यादित हो गई है। सबसे अधिक बहस महिलाओं के अधिकारों पर होती है जिन्हें शरीयत के नाम पर अत्यन्त संकीर्ण दायरे में मर्यादित कर दिया गया है। महिलाओं को यदि समान अधिकार नहीं दिया जाता है तो आधुनिक दुनिया में आधी जनसंख्या के साथ अन्याय होगा। क्या कोई आधुनिक समाज का देश यह पसंद करेगा?

जमीअत उलमा हिंद इसकी न केवल सख्त निंदा करता है बल्कि इसका पुरजोर विरोध भी करेगा। जमीअत उलेमा हिन्द के अध्यक्ष ने कहा है कि मुसलमानों के लिए कुरान और हदीस ही सबसे बड़ा संविधान है और धार्मिक मामलों में व्यवस्था ही प्रासंगिक है जिसमें कयामत तक कोई संशोधन संभव नहीं और सामाजिक सुधारों के नाम पर व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

कठिन समस्याओं को झेल रही हैं, जबकि यह सभी कुप्रथाएँ कुरान की रोशनी में सही नहीं हैं। कुरान में तीन तलाक का जिक्र नहीं है। फिर भी हमारे समाज में तीन तलाक का चलन है। समाज में हलाला जैसी बर्बरतापूर्ण और अमानवीय प्रथा का चलन चलता है और हमारे काजी और धर्मगुरु चुप रहते हैं।

कोई भी संस्कृति और कुप्रथा हमेशा समाज को प्रभावित करती

और अपनी सामाजिक सहभागिता माँग रहे हैं किन्तु कमाल देखिये वह अपने ये अधिकार किसी सरकार या सेना से नहीं बल्कि अपने धर्मगुरुओं से माँग रहे हैं। दरअसल, इस्लामिक उदारपंथ का चोला ओढ़ने वाले कई लोगों की तरह, मौलाना और मुफ्ती, काजी कुरान के दृष्टिकोण को लेकर ज्यादा फिक्रमंद रहते हैं न कि प्रभावित मुस्लिम महिलाओं की सोच को लेकर। उनके सामाजिक



के प्राध्यापक जान वुल का मत था कि आज की मुस्लिम दुनिया में शरीयत का मतलब विभिन्न क्षेत्रों में सत्ता स्थापित करने से है, कठोर दंड दिए जाने की व्यवस्था से नहीं। यदि ऐसा होता तो पुरुषों के मामले में चोरी, बलात्कार, हत्या जैसे जघन्य अपराधों में शरीयत का उतना उपयोग क्यों नहीं किया जाता? शरीयत के कानून के अनुसार कोई मुसलमान अपना धर्म नहीं बदल सकता और कोई गैर मुसलमान मुस्लिम हो जाने के पश्चात् पुनः अपने धर्म में नहीं लौट सकता। क्या यह भी किसी के धार्मिक चिंतन और उसकी किसी आलौकिक शक्ति के प्रति लगाव या मानसिक शांति जैसी सोच पर गुलामी जैसा तो नहीं? अधिकांश मुस्लिम देशों में शरीयत

जहाँ तीन तलाक पर सुप्रीम कोर्ट, केंद्र और मुस्लिम मौलाना आमने-सामने हैं तो वहीं मुस्लिम समाज में भी इस मुद्दे पर मुस्लिम मौलाना, इस्लाम का नव वैचारिक वर्ग, और तलाक से मुक्ति चाहने वाली मुस्लिम महिलाएँ भी मैदान में उड़ी खड़ी हैं। मुस्लिम महिलाएँ तो यहाँ तक मुखर हैं कि राष्ट्रीय महिला आयोग की एक सदस्या किसी धार्मिक नेता और मौलवी से सलाह ले रही हैं। हम भारतीय संविधान के युग में रह रहे हैं, न कि औरंगजेब के काल में। जमीअत उलेमा हिंदी के अध्यक्ष ने इस मामले में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि तीन तलाक और विवाह के संबंध में सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की गई राय अस्वीकार्य है और

कुरान और हदीस ही सबसे बड़ा संविधान कैसे?

राजीव चौधरी

उल्लेखनीय है कि मोदी सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश इस हलफनामे में कहा गया है कि "पर्सनल ला के आधार पर मुस्लिम महिलाओं के संवैधानिक अधिकार नहीं छीने जा सकते और इस धर्मनिरपेक्ष देश में तीन तलाक के लिए कोई जगह नहीं है।"

देखा जाए तो २०११ की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में कुल ३.७२ लाख भिखारी हैं। जिसमें से २५ प्रतिशत भिखारी मुस्लिम हैं। जबकि ७२.२ प्रतिशत भिखारी हिन्दू हैं। आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल भिखारियों में महिलाएँ कम हैं जबकि मुस्लिम भिखारियों में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। जिसका सबसे बड़ा कारण मुस्लिम समुदाय के अन्दर जारी मौखिक रूप से तीन तलाक माना गया है। लेखिका जाकिया सोमन का कहना है कि वर्ष २०१४ में शरई अदालतों में जो २३५ मामले आए उनमें से ८० फीसदी मौखिक तीन तलाक के थे। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि मौखिक तीन तलाक का प्रभाव न केवल प्रभावित महिलाओं पर ही पड़ता है बल्कि परिवार के बच्चे भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं। कई बार तो मुस्लिम महिलाओं को उम्र के उस दौर में अलग फेंक दिया जाता है जहाँ उसे रिश्तों के सहारे की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। यह भी देखा गया है कि राजनीति और धर्मगुरुओं के गठजोड़ के चलते मुस्लिम महिलाओं के न्याय की बात उठाना मुश्किल रहा है। भारत देश में इसी गठजोड़ के कारण अब तक मुस्लिम महिलाएँ तीन तलाक, हलाला, बहुपत्नीत्व, कम उम्र में शादी जैसी

है, समाज की पीढ़ियाँ हमेशा से कुप्रथाओं के मकड़जाल में फंसी चली आ रही हैं। जो कुप्रथा जितनी पुरानी है उसे हम उतना ही मूल्यवान समझ लेते हैं और उसकी प्राचीनता के प्रति श्रद्धा भाव जगाकर उसे बचाने की दुहाई देने लगते हैं। जबकि मैं समझता हूँ हमें हर ५० या १०० साल बाद अपनी परम्पराओं का विश्लेषण कर उसमें समयानुकूल परिवर्तन कर लेना चाहिए। जन माध्यमों या जन विचारधारा में मुस्लिम महिलाओं का जिक्र एक विशेष छवि के रूप में ही आता है दुर्भाग्य से यह एक ऐसी महिला की छवि दिखलाता है, जिसकी कोई आवाज नहीं है, अपनी कोई पहचान नहीं है। जाहिर है, इसके चलते इन महिलाओं के मसलों एवं अधिकारों के बारे में बात करने का तो सवाल ही नहीं उठता। फिर एक तरफ सरकार की ओर से अवहेलना या बेरुखी और दूसरी तरफ समाज के अंदर नाइंसाफी और दमन। यानी १४०० साल पहले दिए गए कुरानी हक तो नहीं मिले और दूसरी तरफ आजादी के ७० साल बाद लोकतंत्र में भी कोई विशेष सहभागिता नहीं मिली। मुस्लिम महिलाओं की खराब स्थिति के लिए सरकार और मजहबी रहनुमा दोनों ही बराबरी के जिम्मेदार हैं। यह कोई अनजाना खुलासा नहीं रह गया है। खुद मुस्लिम समाज के प्रगतिशील तबकों से यह बात अनछिपी नहीं रह गई है।

आज मुस्लिम समाज में बहुत सारे नव विचारक उठ खड़े हुए हैं। जिनमें वह अपने अधिकार, अपनी कुप्रथाओं पर प्रश्नचिन्ह

जीवन को लेकर ऐसे लोग भारतीय संविधान का भी ख्याल नहीं करते जो आर्टिकल-१४ के तहत नागरिकों के साथ बराबरी के मौलिक अधिकार और आर्टिकल-१५ के तहत भेदभाव के खिलाफ मौलिक अधिकार की बात करते हैं। इस संदर्भ में मुस्लिम विचारक फरहा फैज प्रासंगिक हो जाती हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से अपील की है कि सुप्रीम कोर्ट भारतीय मुस्लिमों को मुस्लिम रूढ़िवादियों से बचाने के लिए (आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल बोर्ड) और भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन (भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन) जैसे संगठनों पर बैन लगाएँ क्योंकि इन रूढ़िवादियों की सोच, इनकी विचारधारा जमात-उद-दावा के हाफिज मोहम्मद सईद जैसे लोगों से मेल खाती है। बेखौफ हिम्मत के साथ फैज मदरसा में दी जाने वाली शिक्षा में बदलाव की बात करती हैं और ये भी कहती हैं कि (भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन) दरअसल (आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल बोर्ड) की कठपुतली है। दोनों संगठन शरीया के हिमायती हैं। इस व्यवस्था को ऐसे ही चलते रहने की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए। भारत में केवल एक संविधान होना चाहिए और जज भी जो उसी संविधान के अनुसार काम करें। यानी भारत की न्यायिक व्यवस्था के बराबर चलने वाली एक और व्यवस्था धर्म के नाम पर तो बिल्कुल बंद होनी चाहिए। ताकि समाज के हर एक तबके की महिला निडर होकर अपनी पीड़ा बयान कर सके।

करेंसी नोटों में गांधी क्यों?

करेंसी नोटों में गांधी क्यों? गांधी को राष्ट्रपिता कैसे मानें? यह बड़े गंभीर प्रश्न उठते हैं कारण यह है कि इस देश को बांटने वालों का यदि अगर इस तरह से सम्मान होगा तो इससे बड़ी दुर्भाग्यता नहीं होगी। पहली बात तो यह है कि गांधी ने इस देश को स्वतंत्रता नहीं दिलाई वास्तविकता में उन्होंने इस देश को तोड़ा। उन्होंने हिंदी भाषा को भी राष्ट्र भाषा होने का विरोध किया था और उनका कारण यह था कि वह एक समुदाय की भाषा है। इस देश को भाषा के नाम पर बांटने की भी विचार थी उनकी। उनका करेंसी नोटों में होना हिन्दुओं का अपमान है। उन निर्दोषों का अपमान है जिन्होंने बंटवारे के समय अपनों को गंवाया। विचार रखने का सबको अधिकार है परंतु हमारी प्राचीन सभ्यता एवं धर्म के साथ छेड़छाड़ करने वालों को एवं हमारे सैकड़ों, लाखों भाइयों की हत्या करने वालों को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त है।

शिवम सुनील राय

(पिछले अंक का शेष)

यदि 'गुड़ खाय और गुलगुलों से परहेज' तथा 'चिराग के तले अन्धेरा' के बेहतरीन उदाहरण देखे जायें तो वह हैं इस्लामी शिक्षण संस्थान दारुल उलूम, देवबंद (सहारनपुर) इसका फतवागिरी विभाग और यहाँ के मौलाना। कुरान की मान्यताओं का जो सबसे अधिक उल्लंघन होता है और जिसे 'कुफ्र' कहा जाता है, वह जहाँ सबसे अधिक पनपता है, वह यही स्थान है। कहने को तो दारुल उलूम, देवबंद का फतवा विभाग यह दावा करता है कि यहाँ के फतवे 'कुरान और हदीस की रोशनी' में दिये जाते हैं, परन्तु जब लेखक उनका विश्लेषण इसी 'कुरान और हदीस की रोशनी' में करता है, तो पाता है कि ऐसे फतवे देने में कुरान और हदीस को देखा तक नहीं गया। राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' के मुसलमानों के द्वारा गाये जाने के विरुद्ध दिया जाने वाला फतवा इसका उदाहरण है। देवबंदी मौलानाओं ने इसका आधार यह बताया कि मुसलमान अल्लाह के अलावा किसी को पूजनीय नहीं मानता और कुरान अल्लाह के अलावा किसी के आगे सिर नवाने की आज्ञा नहीं देती। 'वन्देमातरम्' में भारतमाता यानी भारत की पृथ्वी की वन्दना है, जिसकी वन्दना करना कुरान सम्मत नहीं है।

देवबंदी मौलानाओं एवं फतवा विभाग का यह निष्कर्ष नितांत गलत है कि कुरान एवं हदीस इसकी पुष्टि नहीं करती।

'जिस कुरान और हदीस की रोशनी में' देवबंदी मौलानाओं ने यह फतवा दिया है (और जिसे मुसलमानों के दूसरे फिरके या सम्प्रदाय भी मानते हैं, जैसे शिया, बरेलवी, फरीदी इत्यादि) उन्हीं कुरान और हदीस की रोशनी में देखने से पता चलता है कि कुरान के २८ सूराओं में ३० बार से ज्यादा अल्लाह और प्राकृतिक वस्तुओं को अत्यन्त पवित्र मानते हुए उनकी कसम खाई गई है। यह अपने आप में एक आश्चर्य

हुआ ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है वरन् इसे मुहम्मद ने बनाया है जिसमें विभिन्न कथनों को सत्य मानने के लिए खुद मुहम्मद कसमें खाते हैं

खुल पर्ण में, और आबाद घर की,
ऊँची छत और उमड़ते दरिया की।"



वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम

प्रो० ए०पी० सारस्वत

का विषय है जिस अल्लाह को कुरान देने वाला या बनाने वाला बताया है वही अल्लाह अपनी बात की पुष्टि कराने के लिए कभी सितारों की कसम खाता है, कभी पृथ्वी की, कभी दरिया और कभी पर्वत की। क्या अल्लाह को यह लग रहा था कि जमीन के लोग उसकी बात पर विश्वास नहीं कर रहे और न मुहम्मद की बात पर विश्वास कर रहे हैं? इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि कुरान कोई अवतरित (वही)

और अल्लाह से भी कसमें खिलवाते हैं। इस तरह कसमों के आधार पर वह मुसलमानों से इन्हें सत्य मानने को कहते हैं अन्यथा कुरान के कथनों में कोई सत्यता नहीं है। जब अल्लाह और मुहम्मद पृथ्वी, सूरज, पहाड़, नदी, जमीन, जंगल सबको पवित्र मानते हुए इनकी कसमें खा रहे हैं और इन्हें नमन कर रहे हैं तो देवबंदी मौलाना इनके विरुद्ध फतवें देकर कुफ्र क्यों कर रहे हैं?

'कसम पुराण कुरान' के इन समस्त संदर्भों को क्रमवार व्यवस्थित ढंग से देखना आवश्यक है जिससे यह विषय स्पष्ट हो सके। यह अनुवाद, व्याख्या एवं पदटीपें मुख्य रूप से 'कुरान मजीद' सम्पादक मुहम्मद फारुख खां, मक्तबा अल हसनात, रामपुर (१६५५) से ली जा रही हैं—

सूरा ५२: १-६

"कसम है तूर की और किताब तो लिखी हुई है,

(निश्चय ही कयामत आकर रहेगी)

मुहम्मद फारुख खां ने इसमें 'आबाद घर' का अर्थ बताया है— 'जमीन जिस पर मनुष्य आबाद है और जहाँ उसके लिए जीवन व्यतीत करने की समस्त सामग्री संचित कर दी गई है।' मुहम्मद (या अल्लाह) 'जमीन' की कसम खाकर बताते हैं कि "निश्चय ही कयामत आकर रहेगी।" इस आयत में तूर के पहाड़, जमीन, आसमान और दरिया की कसमें भी खाई गई हैं।

सूरा ६६-१-५

"कसम है तीन की और जैतून की

और तूर सोनीन की और इस शान्तिपूर्ण भूमि की।"

उपर्युक्त आयत में तीन शब्द संख्या नहीं है वरन् यह अरब का एक पवित्र स्थान है। यहाँ भूमि को पवित्र मानते हुए मुहम्मद अरबवासियों को विश्वास दिलाने

के लिए उसकी कसम खाते हैं। यह भूमि की महानता का प्रश्न है कि अल्लाह या मुहम्मद उसकी कसम खा रहे हैं, यह वन्देमातरम् कहना ही हुआ।

सूरा ६०:१-२

"कसम खाता हूँ इस नगर (मक्का) की,
और तुम इस नगर के निवासी हो।"

यहाँ मुहम्मद मक्का नगर की भूमि को मातृभूमि के रूप में पवित्र मानकर कसम खाते हैं। पवित्र इसलिए भी बताया गया है कि मुहम्मद यहाँ पैदा हुए और यहाँ के निवासी हैं।

इन तीन आयतों, इनकी अनेक मुस्लिम विद्वानों द्वारा दी गई व्याख्याओं एवं उनकी टीकाओं तथा इनके सन्दर्भ देखने से स्पष्ट होता है कि अल्लाह (और मुहम्मद भी) मातृभूमि और मातृभूमि की महानता को कसम खाकर स्वीकार कर रहे हैं तब मातृभूमि की कसम खुद अल्लाह खा रहा है और मुहम्मद को उसकी महान पवित्रता बता रहा है तो मातृभूमि की पवित्रता अल्लाह के समकक्ष हुई। क्या देवबंदी मौलाना अल्लाह की इस व्याख्या से कोई अलग व्याख्या देंगे? देवबंदी मौलानाओं और भारतीय मुसलमानों को निःसंकोच यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि भारतीय राष्ट्रगीत वन्देमातरम् गाना मुसलमानों की धार्मिक मान्यताओं के बिल्कुल विपरीत नहीं है, इसकी स्वीकृति स्वयं कुरान देता है। इसका एक वर्णन इस्लामी धार्मिक इतिहास में और मिलता है। जब काबा में ६२२ ई० में देवियों लात, मनात और अज्जा की पूजा के मामले में मुहम्मद और कुरैशों का समझौता हो गया तो मुहम्मद अल्लाह से इसकी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए दण्डवत हो गये। मुहम्मद के चाचा अब्बास जो अत्यन्त वृद्ध थे, शारीरिक अक्षमताओं के कारण दण्डवत नहीं हो सकते थे, इसलिए उन्होंने एक मुट्ठी भर धूल उठाई और माथे से लगाई। यह भूमि की पवित्रता के माध्यम से ही अल्लाह के आगे झुकना था, इसे मुहम्मद ने भी स्वीकृति दी।

यह एक हदीस है, भूमि की पवित्रता एवं उसके ईश्वरीय रूप को स्वीकार करने की। इसे स्वयं मुहम्मद ने स्वीकार किया है। मुसलमान नमाज के समय भूमि पर ही माथा टेकते हैं, आसमान

शेष पृष्ठ 11 पर

१०२ वर्षीय हिन्दू महासभा की दोनों नेताओं की मांग से असहमति

दोनों नेताओं की मांग हास्यास्पद और विचित्र है।

१. हिन्दुस्तान हिन्दुओं के नाम से जाना जाता है। वे कृपया संविधान पढ़ कर देखें जिसमें देश का नाम इन्डिया और भारत है। हिन्दुस्तान नाम नेहरू को पसन्द नहीं था। अंग्रेजों ने नेहरू से इन्डिया नाम रखने की मौखिक सहमति ले ली थी।

२. हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी व्यक्ति हिन्दू हैं। खंडित भारत खिचड़ी देश बना हुआ है। यहां कोई भी आकर बस सकता है। सभी नागरिक भारतीय या इन्डियन तो हो सकते हैं किन्तु हिन्दू नहीं हो सकते हैं।

३. खंडित भारत में तीन ईसाई राज्य हैं। वे क्रिसमस का अवकाश क्यों बन्द होने देंगे? हिन्दुओं के स्कूलों में क्रिसमस क्यों मनाया जाता है? आप पहले उन्हें रोकें।

४. ईसा मसीह के मृत्यु दिवस गुड फ्राइडे पर अवकाश नहीं होना चाहिए लेकिन वह भी जारी है। उसे बन्द करावें क्योंकि अवकाश केवल जन्म दिवस पर ही प्रायः होता है।

५. केवल अपने अखबार में छापने से कुछ नहीं होगा। ४-५ लोग गृह मन्त्री से मिलें और ज्ञापन देकर आवें।

निष्कर्ष

जिस प्रकार कांग्रेस ने, पटेल को, प्रधानमंत्री नहीं बनाकर भयंकर गलती की। इसी प्रकार बलराज मधोक को पार्टी का अध्यक्ष नहीं बनाकर भाजपा ने भी गलती की।

सावरकरवाद प्रचार सभा

दुर्ग्याना मन्दिर की उपेक्षा क्यों?

सावरकरवाद प्रचार सभा के वित्त मंत्री मूलचन्द गोयनका

ने पंजाब सरकार पर आरोप लगाया है कि वह अमृतसर के प्रसिद्ध दुर्ग्याना मन्दिर की घोर उपेक्षा कर रही है। क्यों? यह सनातन धर्म का प्राचीन मन्दिर है। अमृतसर के स्वर्ण गुरुद्वारे को भव्य तथा आकर्षक बनाने के लिए उसने तीन हजार करोड़ रुपए व्यय किए हैं लेकिन दुर्ग्याना मन्दिर पर एक पैसा भी नहीं लगाया है। गोयल जी ने मांग की है कि पंजाब सरकार दो हजार करोड़ रुपए व्यय करके दुर्ग्याना मन्दिर का भी जीर्णोद्धार करे। इससे अमृतसर का महत्व और बढ़ेगा। वित्त मंत्री ने भाजपा से पूछा है कि जब पंजाब में अकाली दल और भाजपा की संयुक्त सरकार है तब भाजपा के मंत्रियों ने दुर्ग्याना मन्दिर के लिए मोटी रकम खर्च करने की मांग क्यों नहीं की? वे चुप क्यों रहे? सावरकरवाद प्रचार सभा

“अजम् शाश्वतम् कारणम्
कारणानाम्,
शिवम् केवलम् भासकम्
भासकानाम्।

तुरीयम् तमः पारमाद्यन्तहीनम्,
प्रपद्ये परम् पावनम्
द्वैतहीनम्॥”

(वेदसार शिव स्तवः श्लोक-७)

जो अजन्मा हैं, नित्य हैं,
कारण के भी कारण हैं, कल्याण
स्वरूप हैं, एक हैं, प्रकाशकों के
भी प्रकाशक हैं, अवस्थात्रय से
विलक्षण हैं, अज्ञान से परे हैं, अनादि
और अनन्त हैं, उन परम पावन
अद्वैत सर्वरूप को हम प्रणाम करते
हैं।

“नमः शम्भवाय च मयोभवाय
च,

नमः शंकराय च मयस्कराय
च।

नमः शिवाय च शिवतराय
च॥”

(यजुर्वेद १६/१४)

मोक्ष एवं संसार दोनों ही
स्वरूप वाले, संसार के सभी सुख
देने वाले कल्याणकारी परम
मंगलमय शिव को किया गया यह
नमस्कार, इस सकल ब्रह्म,
अविनाशी व अविकारी आदि देव
की, सौम्य मूर्ति को है। तो साथ
ही वे ही सृष्टिकर्ता हैं, धर्ता हैं
और संहारक भी हैं, रुद्र हैं,
महाकाल हैं। स्वास्थ्य, जीवन और
मृत्यु के आदिदेव श्री शिव ही हैं।

हमारे शास्त्रों में शिवजी को
संहार का देवता माना जाता है;
किन्तु शिव जी संहार के साथ
सृष्टि और स्थिति के कार्य को
भी करते हैं। शिव ही परम सत्य
हैं, परम कल्याणकारी हैं तथा
सर्वाधिक सुन्दर हैं, वे ही साकार
एवं निराकार के शीर्ष शिखर हैं।
सच पूछिए तो शिव सत्यम्, शिवम्,
सुन्दरम् की साक्षात् त्रिवेणी हैं।
अथर्व शिवोपनिषद् में रुद्र भगवान्
स्वयं अपना सत्य प्रकट करते हैं।
“मैं एक प्रतिरूप हूँ। मैं सृष्टि के
पूर्व में था, इस समय हूँ, व भविष्य
में भी मैं ही हूँ। मैं तीनों कालों से
अपरिच्छिन्न हूँ।”

“एकोऽहं यः युमानः” का यही
भाव श्वेताश्वतर उपनिषद् (४/१८)
में आता है कि सृष्टि के आदिकाल
में जब न दिन था न रात्रि थी,
न सत् था न असत्, तब एकमात्र
केवल निर्विकार शिव ही विद्यमान
थे। शिव ही आत्म स्वरूप ब्रह्म
हैं, सर्वव्यापी हैं, तो सर्वलोक
कल्याणकारी होने से वे ही सत्य
हैं, शिव हैं, सुन्दर हैं। वे सत्यम्,
शिवम्, सुन्दरम् की त्रिमूर्ति हैं।
शिव ने ही अपने विग्रह से दो

भागों में विभक्त होकर सृष्टि की
रचना की। इस हेतु ब्रह्म एवं
आत्मा का प्रतीक शिव और शक्ति
ही हैं। उनके इस अर्द्धनारीश्वर
रूप के रहस्य का वर्णन ऋग्वेद, व
अथर्ववेद, वायु पुराण, मत्स्य पुराण
व कालिका पुराण में मिलता है।

“पाशुपती भक्तिः धर्म कामार्थ
सिद्धिदा।

मुनेर्विजयदा चैव सर्व मृत्युञ्जय
प्रदा।”



(श्री लिंग पुराण)

अर्थात् आदि भगवान् शिव की
भक्ति धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी
सिद्धियों, विजय तथा जरा,
व्याधि, क्षरण, मृत्यु सभी पर जय
देने वाली है। अपनी शरणागति में
आये भक्त को वे सर्वस्व प्रदान
करते हैं, तो मृत्यु के मुख में गये
भक्त को मृत्युञ्जय शिव अभयदान
प्रदान करते हैं।

ऐसे श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, अनादि,
अनन्त, धर्म व ज्ञानस्वरूप, परम
कल्याणकारी शिव देवाधिदेव हैं।
वस्तुतः वे ही तो स्रष्टा, धर्ता और
हर्ता हैं। दाम्पत्य प्रेम के आदर्श
सकल ब्रह्मशिव ही एकमात्र सत्य
हैं। वेदों, पुराणों, उपनिषदों व
श्रीमद्भागवत में सभी में शिव की
ही परात्परता का दिग्दर्शन है।
शिव के सत्य को जान लेना ही
सर्वज्ञाता हो जाना है। फिर कुछ
शेष कहाँ रह जाता है।

“अगतिम् ते न जानामि,

गतिम् नैव च नैव च।

विश्वेश्वर महादेव,

योऽसि सोऽसि नमो स्तुते॥”

(श्री लिंग पुराण)

अर्थात् जितने सरल उतने ही
गूढ़ और रहस्यमयी शिव की गति
और स्थिति तथा उनके तत्त्व रूप
को जान पाना किसी मानव देह
पारी के लिए कल्पनातीत भी
है—वर्णनातीत तो है ही।

भगवान् शिव के कार्य, स्वभाव
एवं प्रकृति के अनुरूप अनेकानेक
नाम हैं। उन्हें भक्तगण शंकर,
महाकालेश्वर, महादेव, चन्द्रशेखर,
वृषभवाहन, नीलकण्ठ, महेश्वर,

भगवान् शिव : सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की साक्षात् त्रिवेणी

अखिलेश निगम 'अखिल'

कामान्तक, भालचन्द्र, कर्पूरगौर,
रुद्र, आशुतोष, अर्द्धनारीश्वर,
बेताल, नटराज आदि विभिन्न
नामों से जानते हैं। शिव सहस्रनाम
में भगवान् शिव के एक हजार
नामों का वर्णन है। “शं करोति
इति शंकरः” अर्थात् जो कल्याण
करता है, उसे शंकर कहते हैं।
सहज ही शीघ्र प्रसन्न होने के
कारण उन्हें आशुतोष भी कहा
जाता है, जैसा कि रामचरितमानस
में गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी
कहा है।

“आशुतोष तुम अवदरदानी।

आरति हरहु दीन जन
जानी॥”

सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड को
स्थापित करने वाले देव को
कालपुरुष यानी महाकाल कहते
हैं, इसीलिए शिव को
महाकालेश्वर के नाम से भी सम्बोधि
त किया जाता है।

इसी प्रकार भगवान् शिव को
देवों का देव यानी महादेव के
नाम से भी सम्बोधित करते हैं,
जिसका मूल रहस्य यह है कि
विश्व सर्जन एवं व्यावहारिक
विचारों में मूलतः तीन विचार होते
हैं—

परिपूर्ण पवित्रता, परिपूर्ण
ज्ञान एवं परिपूर्ण साधना। जो
इन तीनों गुणों से युक्त है वही
महादेव है।

शिव की स्रष्टा रूप में ही
अर्द्धनारीश्वर या अर्द्धनारी नटेश्वर
रूप की संकल्पना की गई है।
शिव जी ने अपने ही विग्रह से दो
भागों में विभक्त होकर
अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में सृष्टि की
रचना की है। शिव-पार्वती को
‘जगतः पितरौ’ अर्थात् जग का
माता-पिता कहा जाता है। शिव
जब शक्ति से परिपूर्ण होते हैं, तो
कार्यक्षम होते हैं। शिव-शक्ति की
नित्य समरसता को ही अद्वैत माना
गया है। अद्वैत की संकल्पना में
शक्ति का (माया का) वर्जन न
करके, उसे ब्रह्मशक्ति मानकर
उसका संकलन किया गया है।

भगवान् शिव को बेताल भी
कहा जाता है, बेताल शब्द की

उत्पत्ति मूल रूप से वैताल शब्द
से हुई है। वैताल यानी विकृतियों
को अपनी ताल पर नचाने वाला।
जब आहत एवं अनाहत नाद एकल
होते हैं, तो ‘वै’ नाम स्पन्दन का
निर्माण होता है। यह स्पन्दन समस्त
विकृतियों को अनुकूल बनाते हैं।

भगवान् शिव को नटराज की
भी संज्ञा से विभूषित किया जाता
है, इसका मूल रहस्य शिव के
सगुण स्वरूप एवं कार्य से है।
शिव की दो अवस्थाएँ मानी जाती
हैं। उनमें एक है समाधि अवस्था
एवं दूसरी तांडव या लास्य नृत्य
अवस्था है। समाधि अवस्था का
अभिप्राय निर्गुण अवस्था से है व
नृत्यावस्था का अभिप्राय सगुण
अवस्था से है। जब किसी निश्चित
घटना या विषय की अभिव्यक्ति
के लिए अंगचालन किया जाता है,
उसे नटन अथवा नाट्य की संज्ञा
देते हैं। ऐसे नटन करने वाले को
नट कहते हैं। ऐसी एक पारम्परिक
धारणा है कि नटराज के रूप में
शिव ने नाट्य कला प्रवर्तित की।
शिव आद्यनट हैं, ऐसी श्रद्धा के
कारण उन्हें नटराज की उपाधि
दी गई। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड
नटराज के नृत्य का साक्षी भी है।
जब उनका नृत्य आरम्भ होता है,
तो उससे उत्पन्न होने वाली ध्वनि
से सम्पूर्ण विश्व को गति मिलती
है। जब यह नृत्य समाप्त होता है,
तो वह चराचर विश्व को अपने
अन्दर समेट अकेले ही आनन्द में
निमग्न होकर रहते हैं। यही
नटराज संकल्पना की भूमिका है।
संक्षेप में ईश्वर की क्रियाओं की
उत्पत्ति व लय का प्रतिरूप
नटराज है। नटराज का नृत्य सृष्टि,
स्थिति, संहार, तिरोभाव (माया का
आवरण) व अनुग्रह (कृपा, माया
से परे जाने के लिए) इन पाँच
ईश्वरीय क्रियाओं का दर्शक है।

इसी तरह भगवान् शिव के
रहस्यमय स्वरूप, विशिष्ट
वेश-भूषा एवं अलौकिक कार्यों
के आधार पर उन्हें चन्द्रशेखर,
वृषभवाहन, नीलकण्ठ, महेश्वर,
कामान्तक, भालचन्द्र, कर्पूरगौर
आदि विभिन्न नामों से उनकी
आराधना की जाती है। शिव

महातपस्वी व महायोगी हैं। वे सदैव
बन्धमुद्रा में आसनस्थ रहते हैं व
अत्यधिक तप के फलस्वरूप बड़े
हुए तेज या गर्मी को कम करने के
लिए ही गंगा, चन्द्र, सर्प आदि
शीतलता प्रदान करने वाली वस्तुओं
का उपयोग करते हैं एवं विषपान
के कारण उत्पन्न गर्मी को कम
करने के लिए भी उक्त शीतल
प्रदायिनी, गंगा, चन्द्र व नाग को धा
रण करते हैं तथा बर्फ से ढके
कैलाश पर्वत को उनका समाधि
स्थल बताया जाता है।

शिव के मस्तक पर चन्द्र
सुशोभित है। ममता, शीतलता,
क्षमाशीलता व वात्सल्य की
लहरियों का जहाँ से उद्भव होता
है, उसे चन्द्र कहते हैं। उसी प्रकार
गंगा आध्यात्मिक चेतना एवं
पवित्रता की साक्षात् प्रतीक है,
जैसे सूर्य ग्रहों का तथा आत्मा
शरीर का केन्द्रबिन्दु है। उसी प्रकार
प्रत्येक वस्तु के चैतन्य एवं पवित्रक
का केन्द्रबिन्दु बीज मंत्र ‘गं’ है।
जिस स्रोत से ‘गं’ का प्रवाह होता
है, उसे गं गः यानी गंगा कहा
जाता है। शिव के मस्तक से ‘गं’
(चैतन्य एवं पवित्रता) संदेश बहते
रहते हैं। इसीलिए कहते हैं कि
गंगा शिव के मस्तक से प्रकट
हुई। इसी प्रकार शिव नौ नागों
को भी धारण करते हैं नाग
‘पवित्रक’ का सूचक है। भगवान्
शिव तो तेज, चैतन्य एवं पवित्रता
के साक्षात् आदिश्रोत हैं। शिव के
मस्तक पर एक, कंठ में एक, प्रत्येक
भुजा पर एक, प्रत्येक कलाई पर
एक, कमर में एक व प्रत्येक जांघ
पर एक-एक, इस प्रकार नौ जगहों
पर नौ नाग विद्यमान हैं अर्थात्
शिव का समस्त शरीर ही पवित्रकों
से बना है। अध्यात्मिक में भी
कुण्डलिनी के रूप में चैतन्य प्रवाह
को भी नागिन की उपमा दी गई
है, जो कि सामान्य रूप से मूलाध
ार में साढ़े तीन लपेटे हुए लिये
हुए सुप्तावस्था में रहती हैं।

विभिन्न धर्मावलम्बी भगवान्
शिव एवं शक्ति के पिण्डी रूप
अर्थात् लिंग पूजा की खिल्ली
उड़ाते हैं, जबकि इसके पीछे एक
वैज्ञानिक रहस्य है। भग एवं लिंग
दोनों जननेन्द्रियाँ प्राणि सृष्टि की
उत्पत्ति के कारणी-भूत हैं। अतः
सनातन धर्म में इन्हें सृष्टि
सृजन के प्रतीक रूप में पूजनीय
माना गया है; किन्तु विश्व की
उत्पत्ति वीर्य द्वारा नहीं होती। ऊर्ध्व
वरेतस् में वीर्य का रूपान्तरण ओज
में हो जाता है। शिव के ऊर्ध्वरेतस्
होने के कारण वे मात्र संकल्प
द्वारा नवीन जीव को जन्म दे सकते
हैं। अतएव

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

आईएसआई से जुड़े राष्ट्रद्रोहियों पर कड़ी कार्रवाई करे केन्द्र व शिवराज सरकार, मोदी देश में नसबंदी अभियान चलायें-हिन्दू महासभा

ग्वालियर स्थित होटल सूर्या में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा व राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। संवाददाताओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि बड़े शर्म की बात है कि आईएसआई से जुड़कर राष्ट्रद्रोह करने वाले लोग भाजपा से जुड़े बताये जा रहे हैं। एक समय था कि भाजपा में राष्ट्रवादी लोग होते थे। आज

देशद्रोहियों को भी भाजपा सम्मिलित कर रही है। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि यह सब भाजपा की सत्ता लोलुपता के कारण हो रही है। श्री शर्मा ने भाजपा को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया है। उन्होंने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहा है कि देशद्रोहियों,



भ्रष्टाचारियों व माफियाओं को पार्टी से बाहर कर भाजपा को साफ-सुथरा करें। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने घोषणा किया है कि मध्यप्रदेश में व्याप्त भ्रष्टाचार, आईएसआई की गतिविधियों व शराब की बिक्री के विरुद्ध अखिल भारत हिन्दू महासभा प्रदेश सरकार के विरुद्ध राज्यव्यापी आंदोलन करेगी। साथ ही नसबंदी अभियान चलाने, देश में समान नागरिक कानून बनाने, संविधान की धारा-370 को हटाने, गौहत्या बंदी कानून लागू कराने तथा रामजन्म स्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण कराने के लिये केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार के विरुद्ध हिन्दू महासभा राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन करेगी। प्रेसवार्ता को राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी तथा प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने संबोधित किया।

शेष पृष्ठ 12 का रेनकोट में मनमोहन सिंह और....

आसन के आगे के स्थान को सदन का कुँआ कहा जाता है। वहाँ कोई कुँआ नहीं है लेकिन अंग्रेजी वाले उसे well ही कहते हैं। अब प्रश्न यह है कि जिस बात का स्वागत कांग्रेस के लोगों को मेजें थपथपा कर करना चाहिए था, उस पर गुस्सा उन्होंने सदन के कुँए में छल्ला लगा कर क्यों उतारा? माजरा स्पष्ट है। मोदी ने परोक्ष रूप से डा० मनमोहन सिंह की ईमानदारी की तो भूरि भूरि प्रशंसा की लेकिन दूसरे कांग्रेसियों को उनके उन घोटालों की याद भी दिला दी, जिनको लेकर अभी भी जौंच चल रही है। २ जी से लेकर कोयले की खदानों के आवंटन की बदबू अभी भी समाप्त नहीं हुई है। मीडिया इसे लेकर हलकान हो रहा है। न्यायपालिका अलग से चेतावनी दे रही है। उपर से मोदी ने कटाक्ष कर दिया। कुँए की छल्ला के अतिरिक्त क्या कोई रास्ता बचा था सोनिया कांग्रेस के सिपाहसिलारों के पास? बेचारे मनमोहन सिंह अजीब दुविधा में हैं। न तो बैठे रह सकते हैं और न ही शेष कांग्रेसियों के साथ कुँए की ओर जा सकते हैं। प्रधानमंत्री के पद से मुक्त हो जाने के बाद भी उन्हें उन्हीं की संगत में रहना पड़ रहा है जो कोयलों की दलाली में काले स्याह हो गए हैं। हा हत् भाग्य! बुरी संगत बहुत देर तक सालती रहती है। उधर कांग्रेसी चिल्ला रहे हैं, नरेन्द्र मोदी ने मनमोहन सिंह का अपमान किया है। लेकिन मनमोहन सिंह भी जानते हैं कि मोदी ने तो उनकी ईमानदारी को सलाम किया है। लेकिन यह कोयले वाले कांग्रेसियों को रास नहीं आ रहा, इसलिए वे मनमोहन सिंह को भी जबरदस्ती अपने साथ खींच रहे हैं। बेचारे मनमोहन सिंह। न उगलते बनता है न निगलते बनता है। बुरी संगत का बुरा नतीजा।

प्रति,

श्री मोहनलाल वर्मा जी,
सुनारान मोहल्ला, ग्वालियर,
मध्य प्रदेश।

विषय : मध्यप्रदेश का प्रदेश संयोजक नियुक्त करने की सूचना।

आपको विदित हो कि अखिल भारत हिन्दू महासभा की मध्य प्रदेश इकाई की कार्यकारिणी समिति का कार्यकाल समाप्त हो गया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक जी एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा जी के निर्देशानुसार प्रदेश की नवीन कार्यकारिणी समिति का गठन होने तक आपको मध्य प्रदेश का प्रदेश संयोजक नियुक्त किया गया है। आपको निर्देशित किया जाता है कि पूरे प्रदेश में सदस्यता अभियान तुरंत शुरू करें तथा जिलों की कार्यकारिणी समिति का गठन सुनिश्चित करायें। जिलों की कार्यकारिणी समिति के गठनोपरांत प्रदेश अधिवेशन आयोजित कर प्रदेश की नवीन कार्यकारिणी समिति का चुनाव शीघ्र करायें।

सधन्यवाद

भवदीय

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

अभा हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा-

दो साल में महासभा से जोड़े जाएंगे 2 लाख लोग

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

शहीद हेमू कालानी चौक पर सभा को संबोधित करते हुए अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना शर्मा ने कहा, महासभा में अगले दो साल में दो लाख लोगों को जोड़ना है ताकि आगामी विधानसभा व लोकसभा चुनाव मजबूती से लड़ा जा सके। उन्होंने कहा, पहले 40 जिलों में और फिर पूरे प्रदेश में अभियान चलेगा। उन्होंने हिंदुओं की जनसंख्या बढ़ाने और शराबबंदी करने पर जोर दिया। आमसभा को राष्ट्रीय कार्यालय प्रमुख वीरेश त्यागी, प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा व अन्य ने संबोधित किया। मंच संचालक मोहन लाल ने व सभा की अध्यक्षता महासभा की जिलाध्यक्ष लीला शाय्य ने की। करीब डेढ़ घंटे चली महासभा में करीब दो सौ लोग मौजूद थे।



महाराज बाड़े पर आमसभा को संबोधित करते अतिथि वक्ता।

भ्रष्टाचार के खिलाफ करेंगे आंदोलन

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना शर्मा ने पत्रकारों से चर्चा के दौरान कहा कि प्रदेश में भ्रष्टाचार जोड़े पर है। व्यापक जेले महाघोटाले हो रहे हैं। भाजपा के कार्यकर्ता ही आईएसआई के एजेंट बन रहे हैं। ऐसे में प्रदेश में खुदशक्ती की उम्मीद नहीं की जा सकती। ऐसे लोगों को तो प्रदेश में सरकार चलाने का अधिकार ही नहीं है। इसी विरोध के चलते महासभा के पदाधिकारी आज से ही प्रदेश व्यापी आंदोलन करेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा ने अपना वादा नहीं निभाया। इसके लिए 31 मार्च तक प्रदेश के हर जिले में धरने-प्रदर्शन किए जाएंगे और अप्रैल में दिल्ली के जंतर-मंतर पर जाकर राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन करेंगे। महासभा के दो हिस्से होने पर किए गए सवाल पर शर्मा ने कहा कि वह भी हमारा हिस्सा है। पत्रकार वार्ता के दौरान महासभा के राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

अभा हिन्दू महासभा का आंदोलन शुरू

ग्वालियर। प्रदेश में भ्रष्टाचार, शराबबंदी सहित अन्य मामलों को लेकर अखिल भारत हिन्दू महासभा ने प्रदेश में चरणबद्ध आंदोलन की शुरुआत मंगलवार को ग्वालियर से की गई। इसके तहत हेमू कालानी चौक पर आमसभा का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी एवं प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने मंगलवार को पत्रकारों से चर्चा में बताया कि प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ डंप कांड सहित कई मामलों में आरोप लगे हैं। वर्तमान में जासूसी कांड में भी पकड़े गए आरोपी भाजपा के कार्यकर्ता बताए गए हैं। इसके बाद भी इनके खिलाफ अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। एक समय था जब भाजपा में राष्ट्रवादी लोग होते थे, लेकिन अब देशद्रोहियों को भी भाजपा शामिल कर रही है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के नेताओं ने जनता से प्रदेश सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया है। प्रदेश में धरना प्रदर्शन का सिलसिला मार्च माह तक जारी रहेगा।

राष्ट्रद्रोहियों के विरुद्ध हो कड़ी कार्रवाई: हिमस

ग्वालियर, न.सं.। केन्द्र और राज्य सरकार को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से जुड़े राष्ट्रद्रोहियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई कर पूरे देश को ऐसा संदेश देना चाहिए, जिससे भविष्य में कोई राष्ट्र के प्रति द्रोह करने की हिम्मत न जुटा पाए। यह बात अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय कार्यालय महामंत्री मुन्ना कुमार सिंह ने मंगलवार को ग्वालियर प्रवास के दौरान संवाददाताओं से चर्चा करते हुए कही।

श्री शर्मा ने कहा कि यह बड़े ही शर्म की बात है कि आईएसआई से जुड़कर राष्ट्रद्रोह करने वाले लोग एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल से जुड़े बताए जा रहे हैं, जबकि देशद्रोही, भ्रष्टाचारी, माफियाओं का राजनीतिक दलों में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार करने की भी जरूरत है। उन्होंने बताया कि नसबंदी अभियान चलाने, समान नागरिक कानून बनाने, धारा 370 को हटाने, गौ हत्या बंदी कानून लागू करने, राम जन्म स्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण कराने आदि मुद्दों को लेकर हिन्दू महासभा देशव्यापी आंदोलन चलाएगी। शाम को महाराज बाड़ा स्थित हेमू कालानी चौक पर श्री शर्मा ने इन्हीं मुद्दों पर जनसभा को भी संबोधित किया।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

चीन की मीडिया ने भारत को दी.....

हे, ऐसे समय में जब अमेरिका के नये राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ताइवान के मुद्दे पर चीन को चुनौती नहीं देकर एक चीन की नीति पर सहमत होने और इसका सम्मान करने का फैसला किया है, भारत ने मुश्किल खड़ी की है। ताइवान के सांसदों के प्रतिनिधिमंडल के संदर्भ में आलेख में सवाल उठाया गया है। इसमें कहा गया है, भारत और ताइवान के बीच आम तौर पर उच्चस्तरीय यात्राएं नहीं होती हैं। ऐसे में भारत ने इस समय में यात्रा के लिए ताइवान के प्रतिनिधिमंडल को क्यों आमंत्रित किया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से कहा है कि चीन से डरने की आवश्यकता नहीं है। भारत अपनी निष्पक्ष विदेशी नीति को बनाकर रखें।

शेष पृष्ठ 1 का

अंतरिक्ष में भारत की सबसे बड़ी.....

एक बार में 39 उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण की तुलना में भारत एक बार में 908 उपग्रह प्रक्षेपित करने में सफलता हासिल कर इतिहास रचने वाला पहला देश बन गया है। भारत ने इससे पहले जून 2015 में एक बार में 23 उपग्रहों को प्रक्षेपण किया था। यह उसका दूसरा सफल प्रयास है। पीएसएलवी पहले 998 किलोग्राम वजन की काटेरेसेट-2 श्रृंखला के उपग्रह का पृथ्वी पर निगरानी के लिए प्रक्षेपण करेगा और उसके बाद 903 सहयोगी उपग्रहों को पृथ्वी से करीब 520 किलोमीटर दूर ध्रुवीय सन सिंक्रोनास ऑर्बिट में प्रविष्ट कराएगा जिनका अंतरिक्ष में कुल वजन 668 किलोग्राम है। इसरो के वैज्ञानिकों ने एकसएल वैरियंट का इस्तेमाल किया है जो सबसे शक्तिशाली राकेट है और इसका इस्तेमाल महत्वाकांक्षी चंद्रयान में और मंगल मिशन में किया जा चुका है। इनमें 66 उपग्रह अमेरिका के, पांच क्रमशः इसरो के अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों—इजरायल, कजाकिस्तान, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड, संयुक्त अरब अमीरात के हैं। राकेट में दो अन्य भारतीय सूक्ष्म उपग्रह भी हैं, जिनका कुल वजन करीब 939 किलोग्राम है। दोनों भारतीय नैनो—सेटेलाइट आईएनएस-9ए और आईएनएस-9बी को पीएसएलवी पर बड़े उपग्रहों का साथ देने के लिए विकसित किया गया था। अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों की नैनो—सेटेलाइटों का प्रक्षेपण इसरो की व्यावसायिक शाखा एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड की व्यवस्था के तहत किया जा रहा है। काटेरेसेट-2 श्रृंखला के मिशन का समय पांच साल का है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई देने हुए कहा है कि इसरो के वैज्ञानिक प्रशंसा के पात्र हैं। भारतीय वैज्ञानिक दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

भगवान शिव सत्यम्, शिवम्.....

शिव के संकल्प मात्र से ही विश्व की उत्पत्ति हुई है। शिव के जिन बारह ज्योतिर्लिंगों को स्वयंभू कहा जाता है, वे सभी शिव के तेज रूप के प्रतीक हैं एवं उनकी स्वयं उत्पत्ति हुई है। भगवान शिव के मानवी रूप या मूर्तिरूप में उनके करकमलों में डमरू, त्रिशूल, पाश या मृग तथा परशु लिए हुए दिखाया जाता है, जिसका भी तात्त्विक रहस्य है। डमरू शब्द ब्रह्म का प्रतीक है। इससे बावन अक्षरों की मूल ध्वनि तथा चौदह माहेश्वर सूत्रों के रूप में वर्णमाला का निर्माण हुआ। त्रिशूल की तीन नोकें इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया की सूचक हैं, कहीं—कहीं इन्हें उत्पत्ति, स्थिति व लय के मूल के रूप में वर्णित किया गया है। पाश कालपाश एवं मृग चार वेदों का प्रतीक है वहीं परशु अज्ञान विध्वंसकर्ता का प्रतीक माना गया है। वर्णों में प्रथम है ‘अकार’ और अंतिम वर्ण है ‘हकार’। परम कल्याणमय परम प्रकाश शिव ही अकार है और ‘हकार’ है माँ शक्ति। शिव और शक्ति ही शब्द और अर्थ हैं, सृष्टि हैं। लोक संस्कृति में शिव सी निराली व रहस्यमयी छाप किसी अन्य की नहीं। भूत, सूर्य, श्मशान, ताण्डव, त्रिनेत्र, भस्म, बाघम्बर और डमरू के साथ शिव की कल्याणकारी छवि मानस पटल पर बरबस आ जाती है। शिव जी का सौम्य, अनुग्रही और रौद्र अथवा संहारक रूप सर्वाधिक ही पूज्य है। शिव चर्चा ही रहस्य, अध्यात्म व काल चर्चा है। वे मृत्यु स्वरूप महाकाल भी हैं, तो मृत्युञ्जय बन आसन्न मृत्यु को टाल देने की शक्ति रखने वाले महायोगी भी हैं। वे अपने तांडव नृत्य व तीसरे नेत्र और खुली जटाओं से भयभीत करने वाले परम क्रोधी हैं, तो सहज जल स्नान व जंगली कंदमूल अर्पण से ही शीघ्र प्रसन्न होकर सर्वस्व दे देने की वरदानी मुद्रा भी शिव की ही है। जिनके डमरू वादन से सप्त स्वर प्रकट हो गये। जिनकी कृपा से पाणिनि ने अष्टाध्यायी की रचना की। शिव ही नृत्य, तन्त्र, नाद व ज्योतिष योग के प्रथम आचार्य हैं, परम सत्त्व व एकमात्र सत्य हैं, वे ही प्रलयकारी हैं, संहारक हैं, रौद्र स्वरूप हैं। माँ गंगा जिनकी जटाओं में विराजमान हैं, जो सृष्टि के कल्याण के लिए विषपान कर अपने कंठ को नीलवर्ण बना लेते हैं, वे ही वैद्यनाथ के रूप में औषधाचार्य हैं। वे यदि क्लिष्ट व रहस्यमय हैं, तो वही उतने ही सहज, सरल व भक्तों के उनके अपने भोलेनाथ हैं। उनके बारे में कहा गया है—

“परमात्मानमेकम् जगत् बीजमाद्यम्,

निरीहम् निराकारम् ओंकार वेद्यम्।

यतो जायते पाल्यते येन विश्वम्

तमीशम् भजे लीयते यत्र विश्वम्।।”

(वेदसार—शिव स्तवः श्लोक—५)

अर्थात् जो परमात्मा हैं, एक हैं, जगत् के आदिकारण हैं, इच्छा रहित हैं, निराकार हैं और प्रणव द्वारा जानने योग्य हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति और पालन होता है और फिर जिनमें उसका लय हो जाता है, उस प्रभु का हम सभी भजन करें। नटराज रूप में नृत्य शास्त्र के आदि रचयिता महादेव ही तो अपने सदाशिव स्वरूप में महर्षियों को धर्म एवं ज्ञान का ‘उपदेश’ देने हेतु दक्षिण दिशा की ओर मुख करके विराजमान हैं, वे ही संहारक व उग्र रूप में कामान्तक, त्रिपुरान्तक, अघोर भैरव, महाकाल, त्र्यम्बक, बेताल, विरूपाक्ष एवं कंकाल स्वरूप हैं। तो सौम्य रूप में चन्द्रशेखर, भालचन्द्र, वृषभ वाहन, सोमस्कन्द, नीलकण्ठ और महेश्वर हैं। शिव जनमानस में सर्वाधिक प्रिय और अद्भुत हैं। वे गंगाधर हैं, सदाशिव हैं, कल्याणकारी हैं। अद्भुत उपकरण और अलंकारधारी, विचित्र वेशभूषा उन्हें रहस्यमय बनाती है। पर वे परम योगी हैं, आदि दार्शनिक हैं, भस्म से वे प्रत्येक की नश्वरता क्षण—भंगुरता के परम सत्य का बोध ज्ञान देते हैं, तो उनकी भक्ति सर्वसुखप्रदाता और मृत्यु पर विजय प्राप्त कराने वाली है। इस अर्थ में शिव विरोधाभासी होने का जो आभास देते हैं, वही वस्तुतः परम सत्य है। आइये, हम सभी भगवान् शिव की, ज्ञानी बनकर नहीं; बल्कि एक निश्चल भक्त बनकर अपने समस्त इन्द्रिय जनित ज्ञात—अज्ञात अपराधों की बारम्बार क्षमा प्रार्थना करते हुए उनकी आराधना करें।

“कर चरण कृतम् वाक्कायजम् कर्मजम् वा,

श्रवण नयनजम् वा मानसम् वापराधम्।

विहितमविहितम् वा सर्वमेतत् क्षमस्व,

जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।”

शेष पृष्ठ 8 का

वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम.....

की ओर मुँह नहीं करते, जबकि कुरान में बताया गया है कि अल्लाह सातवें आसमान पर रहता है। मुहम्मद ने पृथ्वी एवं मातृभूमि को भी ईश्वरीय रूप समझा है और इसे दैवीय प्रतीक रूप समझकर स्वीकार किया है। मातृभूमि की महानता एवं पूजा से जुड़े कुरान और हदीस के ये कुछ सीधे संदर्भ हैं जिन्हें मुहम्मद और अल्लाह कसमें खाकर बताते हैं। विषय को प्रारम्भ में ही स्पष्ट करने के लिए इन्हें प्रस्तुत किया गया है। अब विस्तार से हम कुरान के उन 24 सूराओं (अध्यायों) से 30 आयतों को देखेंगे जिनमें मुहम्मद अपनी किसी बात की पुष्टि के लिए या जनसाधारण को विश्वास दिलाने एक के बाद एक कसमें खाते हैं। (शेष अगले अंक में)

दिनांक 08 मार्च से 14 मार्च 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अमालिका एकादशी	08 मार्च	बुधवार
पूर्णिमा, होलिका दहन	12 मार्च	रविवार
धूलिवदन	13 मार्च	सोमवार

12

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

निष्कर्ष

दिनांक 01 मार्च से 07 मार्च 2017 तक

यह भी सच है

रेनकोट में मनमोहन सिंह और हाहाकार करते उनके साथी

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

पिछले दिनों संसद में हुए राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी में कहा कि गुसलखाने में भी रेनकोट पहन कर नहाने की कला कोई डा० मनमोहन सिंह से सीखे। इससे सोनिया कांग्रेस के सभी वरिष्ठ और कनिष्ठ नेता बहुत गुस्से में आ गए। परम्परागत तरीके से हाहाकार करते हुए सभा कक्ष के बीचोंबीच आ गए। उनका कहना था कि मोदी का यह जुमला डा० मनमोहन सिंह के लिए बहुत ही अपमानजनक है। जुमला तो वापिस लिया ही जाना चाहिए, साथ ही प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर की गई इस टिप्पणी के लिए मोदी क्षमा भी मांगें। इसलिए यह जाँच करना बहुत जरूरी है कि मनमोहन सिंह के बारे में मोदी ने ऐसा क्या कह दिया जिसके कारण सभी कांग्रेसी गुस्से में मुँह लाल कर बैठे? भारतीय भाषाओं में एक मुहावरा है, काजल की कोठरी में भी बेदाग रहना। जो काजल की कोठरी में रहेगा, लाख सावधानी के बावजूद उस पर कहीं न कहीं काला दाग लग ही जाएगा। काजल की कोठरी में रहने की विवशता हो लेकिन अपनी सावधानी से काले कलंक या टीका से बचा रहे, ऐसा कोई विरला ही हो सकता है। गुसलखाने में जाओगे तो छींटें तो पड़ेंगे ही। लेकिन गुसलखाने में नहाते हुए भी रेनकोट पहन कर छींटों से बचे रहने का प्राणायाम करना बहुत ही कठिन साधना है। इसे कोई विरला ही साध सकता है। अब इसकी वर्तमान सन्दर्भों में व्याख्या की जाए। कबीर की उलटबांसियों का साधारण भाषा में भाष्य करना बहुत जरूरी होता है, तभी उसका अर्थ जन साधारण के पल्ले पड़ता है। कबीर कहते हैं, नाव बिच नदिया डूबी जाए। चालाक अध्यापक बिच को नदिया से जोड़कर समझाता है। नाव, बिच नदिया, डूबी जाए। नदिया के बीच में नाव डूब रही है। अध्यापकसकी इसी चालाकी से इस उक्ति के बीच छिपा रहस्य बाहर नहीं निकल पाता। भाष्य न किया जाए तो उस्ताद लोग तो कबीर को भी भरे बाजार पकड़ लें। कोई व्यक्ति ऐसे लोगों के बीच रहता हो, जो भ्रष्टाचार के कारनामों में लिप्त हों। उसकी क्या स्थिति हो सकती है? उसके सामने तीन विकल्प हो सकते हैं। पहला विकल्प, वह उन भ्रष्टाचारियों को गलत काम करने से रोके। राष्ट्र की सम्पत्ति उनको लूटने न दे। लेकिन मान लें, ऐसा करना उसके बूते से बाहर की बात है। क्योंकि यदि वह इन भ्रष्टाचारियों को रोकता है तो भ्रष्टाचारी इक्कठे होकर उसे ही उस मोहल्ला से बाहर फेंक देंगे। इसका अर्थ हुआ कि वह चाहता हुआ भी भ्रष्टाचारियों को उनके काले कारनामों से रोक नहीं सकता। दूसरा विकल्प यह हो सकता है कि वह भ्रष्टाचारियों का ऐसा मोहल्ला स्वयं छोड़कर बाहर आ जाए। लेकिन उस मोहल्ले से बाहर जाने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए क्योंकि यहाँ मोहल्ले से अभिप्राय प्रधानमंत्री की कुर्सी से है। ऐसी हिम्मत तो कोई विरला ही दिखा सकता है, जो इस संसार की मोहमाया से विरक्त हो गया हो। फिर तीसरा विकल्प क्या हो सकता है? वह विकल्प यही है कि वह कम से कम अपने आप को भ्रष्टाचार से बचाए रखे। सींग कटा कर स्वयं भी भेड़ों की उस टोली में शामिल न हो जाए। सत्ता के गलियारों में पग पग पर हजारों प्रलोभन मिलेंगे, जहाँ हरदम फिसलने का खतरा बना रहता है। खासकर जब आसपास के संगी साथी कोयलों की दलाली में अपना मुँह काला करवा रहे हों। कीचड़ में रहना और कपड़ों पर कीचड़ का दाग भी न लगे, ऐसी साधना कितने लोग कर पाते हैं? यह सबसे बड़ी साधना है। इसके लिए सभी इन्द्रियाँ एक साथ साधनी पड़ती हैं। डा० मनमोहन सिंह ने दस साल तक प्रधानमंत्री रहते हुए यही साधना की है। सोनिया कांग्रेस ने अपनी पारिवारिक विवशताओं के चलते उन्हें देश का प्रधानमंत्री बनाए रखा। उनके आसपास के कांग्रेसी, चाहे वे वरिष्ठ थे या कनिष्ठ थे, अनेक प्रकार के घोटालों में लोटपोट हो रहे थे। यह सब उनकी आँखों के सामने हो रहा था लेकिन वे उसे रोक नहीं सकते थे। क्योंकि प्रधानमंत्री का पद उन्होंने अपने बलबूते अर्जित नहीं किया था बल्कि वे दूसरों द्वारा दी गई सत्ता भोग रहे थे। मनमोहन सिंह की जीवन शैली को देखते हुए शायद, सत्ता भोग रहे थे कहना उचित नहीं होगा। कहा जा सकता है कि वे जितना हो सकता था उतना अपने पद की जिम्मेदारियों का निर्वाहन कर रहे थे। वे उस मकान में रह रहे थे जिसकी छत से हरदम भ्रष्टाचारियों के कारनामों का पानी टपकता रहता था। उन्हें निरन्तर चौकन्ना रहना पड़ता था कि कोई बूँद उनपर न पड़ जाए जो उनकी जीवन भर की कमाई को एक झटके में खध्म कर दे। कई बार तो इससे भी कड़ी परीक्षा में से गुजरना पड़ता है। मौसम सर्दियों का हो और छत से टपकने वाला पानी गुनगुना हो तो भीतर से ही इच्छा जागने लगती है कि गुनगुने पानी की चार बूँदें शरीर पर पड़ जाएँ तो आनन्द आए। ऐसी इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए तो और भी कड़ी साधना करनी पड़ती है। डा० मनमोहन सिंह ने दस साल कड़ी साधना की है। तभी वे इस मोहल्ले में रहते हुए भी उसमें से बेदाग निकल सके हैं। नरेन्द्र मोदी ने मनमोहन सिंह की उनकी इस साधना और बेदाग छवि के लिए ही प्रशंसा की थी। वे घोटालेबाजों के मोहल्ले में रहते हुए भी बेदाग निकल आने में सफल हुए। गुसलखानों में भी रेनकोट पहन कर नहाने की साधना इसे ही कहते हैं। सोनिया कांग्रेस के लोगों को तो नरेन्द्र मोदी की इस टिप्पणी का मेजें थपथपा कर स्वागत करना चाहिए था। उनके एक वरिष्ठ साथी की ईमानदारी और निष्कलंक जीवन की प्रशंसा की जा रही थी। लेकिन हुआ इसके उलट। जैसे ही नरेन्द्र मोदी ने मनमोहन सिंह की ईमानदारी की प्रशंसा की, सभी कांग्रेसी सदन के कुँए में कूद गए। सदन के कुँए में कूद जाना भी एक नया मुहावरा है। सदन में अध्यक्ष के

शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

देश के पीएम या भाजपा के



नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद की शक्ति का अहसास तो है, लेकिन इस पद की गरिमा और मर्यादा का अहसास भी उन्हें होना चाहिए। ७० साल के लोकतंत्र में संसद में पक्ष और विपक्ष हमेशा रहे हैं और दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी रहा है। हर सरकार को अपने विरोधियों के वार सहने पड़े, आरोपों का जवाब देना पड़ा। कई बार ऐसे अवसर बने कि तीखी बहसों के कारण सदन की कार्यवाही स्थगित हुई सांसदों ने बहिर्गमन किया। बल्कि पिछले कुछ वर्षों से तो संसद में काम कम हुआ, हंगामे अधिक हुए। कई बार सांसदों के अभद्र व्यवहार के कारण संसद की गरिमा को ठेस पहुंची। लेकिन शायद ही किसी प्रधानमंत्री के बयानों और भाषणों पर इतना विवाद हुआ हो, जितना मोदीजी के बयानों पर हो रहा है। वे सदन में बोलते भी हैं तो ऐसा लगता है मानो देश के प्रधानमंत्री नहीं, भाजपा के प्रधानमंत्री हैं और उनका एकमात्र उद्देश्य विरोधियों की खिचाई करना है, उन पर तंज कसना है और हिसाब चुकता करना है। मंगलवार को उन्होंने उत्तराखंड के भूकंप का जिक्र राहुल गांधी के भूकंप संबंधी बयान से जोड़कर किया। इस पर सदन में भाजपा सांसदों ने खूब ठहाके लगाए, लेकिन आम जनता को मजाक का यह तरीका पसंद नहीं आया। सोशल मीडिया पर इसकी खूब आलोचना भी हुई। लोकसभा में ही उन्होंने आम आदमी पार्टी के सांसद भगवंत मान पर टिप्पणी की थी कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो चारवाक के सिद्धांत पर चलते हैं, चारवाक ने कहा था कर्ज लो और घी पियो, पर शायद भगवंत मान होते तो कुछ और ही पीने को कहते। नोटबंदी का फैसला सही बताने के लिए किसी सांसद की निजी जिंदगी का जिक्र सदन में करना और वह भी मखौल उड़ाने के लिए, यह व्यवहार क्या प्रधानमंत्री को शोभा देता है। अगर सांसद मान के कुछ खाने या पीने से संसद की मर्यादा भंग हो रही है या किसी कानून का उल्लंघन हो रहा है, तो उन पर नियमानुसार कार्यवाही करने का हक संसद के पास है। प्रधानमंत्री औपचारिक बयान में किसी पर निजी टिप्पणी नहीं कर सकते। नरेन्द्र मोदी की टिप्पणी से आहत भगवंत मान ने लोकसभा अध्यक्ष सुमित्र महाजन को एक पत्र दिया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि प्रधानमंत्री ने उनको लेकर जो टिप्पणी की थी उसे सदन की कार्यवाही से बाहर किया जाए। मोदीजी का कहना है कि इतने बड़े पद पर रहे व्यक्ति ने जब प्लंडर और लूट जैसे शब्द प्रयोग किए थे तो ये सोचना चाहिए था कि संविधान की मर्यादा क्या होती है। हम मर्यादा का आदर करते हैं। किसी भी रूप में पराजय स्वीकार ही नहीं करना, ये कब तक चलेगा। विगत सत्र में नोटबंदी के फैसले को गलत बताते हुए डा. मनमोहन सिंह ने नरेन्द्र मोदी को आड़े हाथों लिया था। तो क्या उस हमले का जवाब प्रधानमंत्री अब इस तरह से देंगे, और क्या संसद में जरूरी मुद्दों पर बर्चा की जगह इस तरह हिसाब चुकता करने का खेल चलेगा। मोहल्ले में दो गुटों के बीच प्रतिद्वंद्विता और शह-मात का खेल असल जीवन से लेकर फिल्मों तक खूब देखा गया है, लेकिन संसद मोहल्ला नहीं है। यह बात सभी राजनीतिक दलों को समझना चाहिए। डा. मनमोहन सिंह के फैसलों पर विवाद हो सकते हैं, आलोचना हो सकती है, लेकिन उन पर निजी तौर पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं लगा है। ऐसे में उन पर रेनकोट पहन कर नहाना जैसी टिप्पणी अशोभनीय लगती है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18



साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 01 मार्च से 07 मार्च 2017 तक

रजि सं. 29007/77

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।

प्राप्तेशु